पी. एण्ड एस. बैंक राजभाषा

अंकुर

सितंबर 2016

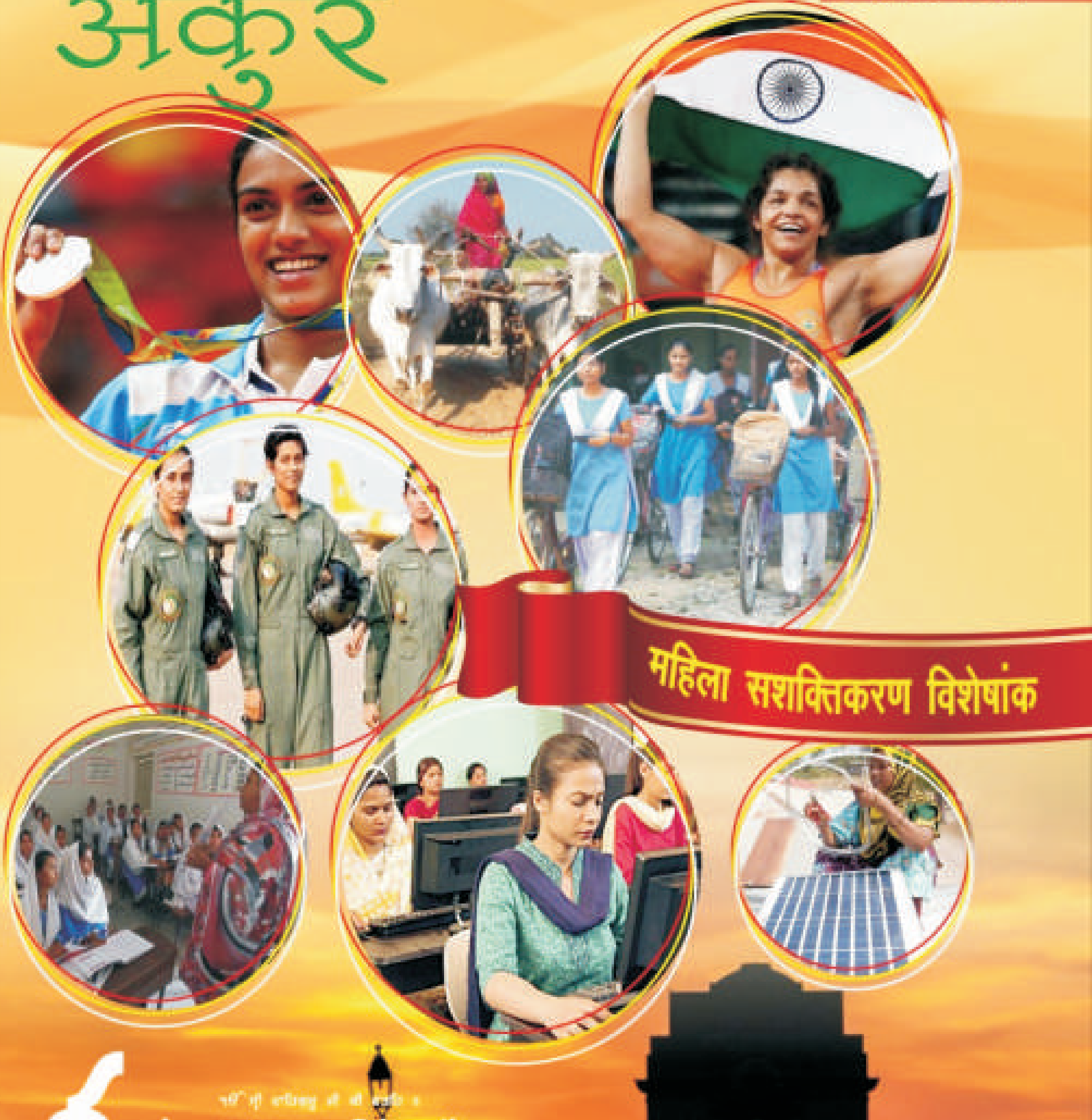

महिला सशक्तिकरण विशेषांक

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

Punjab & Sind Bank

(राजभाषा विभाग)

पी.एस.बी

हिंदी दिवस समारोह 2016

राजभाषा हिंदी में काम करने के प्रति प्रेरित करते हुए बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदर बीर सिंह (आई.ए.एस.), मंच पर दाएं से बाएं बैठे हैं : श्री एम. जी. श्रीवास्तव : मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री मुकेश कुमार जैन : कार्यकारी निदेशक, श्री अरविंद कुमार जैन : कार्यकारी निदेशक, श्री दीनदयाल शर्मा : महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा श्री राजिंदर सिंह बेवली : सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125

सितंबर, 2016

मुख्य संरक्षक

श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री एम. के. जैन एवं श्री ए. के. जैन

कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री दीन दयाल शर्मा

महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक व प्रकाशक

श्री राजिंदर सिंह बेक्ली

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री कंवर अशोक

श्री राजीव कुमार राय

वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

डॉ. नीरू पाठक

प्रबंधक

श्री सोनी कुमार

राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि - 31 अक्टूबर 2016)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस

5/30ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015

फोन : 98100 87743

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल / विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	हिंदी दिवस पर गृह मंत्री जी का संदेश	4
5.	हिंदी दिवस पर वित्त मंत्री जी का संदेश	5
6.	हिंदी दिवस पर रिज़र्व बैंक के गवर्नर का संदेश	6
7.	साक्षात्कार - सुश्री हरविन्द्र सचदेवा, उ.म.प्र. (आई.टी.)	7
8.	ग्राहक के मुख से	8
9.	बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान	9
10.	भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकार	14
11.	महिलाएं और ओलंपिक - 2016	15
12.	प्रादेशिक भाषा - तमिल	18
13.	अस्मिता को ढूंढती नारी	19
14.	प्रतियोगिताओं के विजेता	21
15.	राजभाषा शील्ड पुरस्कार	22
16.	हिंदी दिवस	23
17.	विमोचन	24
18.	स्वर कोकिला लता मंगेशकर	25
19.	ज़रा सोचिए....? / कार्टून कोना	29
20.	आंचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस एवं कार्यशालाएँ	30
21.	काव्य मंजूषा	32
22.	सीख	33
23.	एक लड़की : असुरक्षित सी	36
24.	क्या पूंजीवाद द्वारा समावेशी विकास को पाना संभव है?	37
25.	महिला शक्ति का प्रथम स्तंभ 'माँ'	38
26.	बंधन मुक्ति की चाह	39
27.	शक्ति का सशक्तिकरण	42

आपकी कलम से....

आपके संपादन में प्रकाशित हिंदी पत्रिका पीएसबी राजभाषा अंकुर का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत ही अच्छा लगा कि 'राजभाषा अंकुर' को भारतीय रिज़र्व बैंक हिंदी गृह पत्रिका प्रतियोगिता में एक बहुत ही प्रतिष्ठित शील्ड प्राप्त हुई। इसके लिए आप और पत्रिका के संपादक श्री राजिंदर सिंह बेदली और संपादक मंडल का प्रत्येक सदस्य बधाई का पात्र है। पत्रिका में प्रादेशिक भाषाओं को स्थान दिया जा रहा है, यह बहुत ही प्रशंसनीय कदम है। इससे न केवल हिंदी भाषी स्टाफ सदस्य, बल्कि स्थानीय भाषाओं के सदस्य भी इस पत्रिका से अधिक जुड़ाव महसूस करेंगे। पत्रिका में जहाँ एक ओर कार्यशालाओं, राजभाषा संबंधी विभिन्न लेखों, संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों द्वारा राजभाषा संबंधी निरीक्षणों के छायाचित्रों के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए स्टाफ सदस्यों को प्रेरित किया गया है वहीं दूसरी ओर बैंकिंग व्यवसाय जैसी चुनौती को नैतिक गुणों की थाती से बहुत ही रोचक ढंग से स्वीकार करने की कला सिखाई गई है। साथ ही ऐतिहासिक शहर 'आगरा' के भ्रमण और ट्युलिप की जानकारी बहुत ही सुंदर और आकर्षक ढंग से कराने का प्रयास काफी सफल रहा है। पत्रिका का यह अंक निश्चित रूप से संजो कर रखने लायक बन पड़ा है। आपको पुनः बहुत-बहुत बधाई। आशा है भविष्य में भी आप पत्रिका के अंक इसी प्रकार प्रेषित करते रहेंगे।

एच. एस. सोढ़ी
सहायक महाप्रबंधक (पंजाब एण्ड सिंध बैंक)
चेयरमैन, सतलुज ग्रामीण बैंक, बठिण्डा

हमें अंकुर पत्रिका का जून 2016 का अंक मिला। हमने इस "अंकुर" पत्रिका को पढ़ा। यह पत्रिका खूबसूरत होने के साथ-साथ ज्ञान वर्धक है। इस पत्रिका के लिए आप बधाई के पात्र हैं। इस पत्रिका में जिन विषयों का वर्णन किया गया है, लगभग सभी विषय ज्ञानवर्धक हैं। खासकर 'योग करें निरोग' विषय ज्ञानवर्धक और रुचिकर है। इस पत्रिका के लिए इस कार्यालय की शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
आंचलिक प्रबंधक, चेन्नई

"राजभाषा अंकुर" का जून 2016 अंक प्राप्त हुआ। वैसे तो पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं किंतु श्री देवेन्द्र कुमार सेठी का लेख योग करें निरोग रुचिपूर्ण होने के साथ ज्ञानवर्धक भी है। ट्युलिप मेनिया लेख भी अत्यंत रोमांचक है। विविध जानकारी देती यह पत्रिका पाठकों को अवश्य ही आकर्षित करती है। सुंदर एवं उपयुक्त चित्रांकन ने पत्रिका की शोभा को और भी बढ़ा दिया है। राजभाषा हिंदी तथा बैंकिंग संबंधी लेख, 'थीम' कहानी, कुल मिलाकर पत्रिका की समस्त रचनाएं न केवल ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं अपितु मनोरंजक एवं प्रेरणादायक भी हैं। पत्रिका के सुंदर संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। आगामी अंक की प्राप्ति हेतु प्रतीक्षारत।

मोहिनी
सहायक प्रबंधक
सिटी बैंक, गुड़गांव

विषयान्तर्गत आपके बैंक की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का अंक अप्रैल-जून 2016 प्राप्त हुआ। राजभाषा गतिविधियों, बैंकिंग संबंधी लेखों तथा प्रादेशिक भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लेखों के साथ प्रकाशित यह अंक अत्यन्त रुचिकर है। इस अंक को ज्ञान-वर्धक एवं रुचिकर बनाने में आपका प्रयास सराहनीय है। हमें आशा है कि भविष्य में आपकी त्रैमासिक गृह पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' और अधिक उपयोगी एवं सुरुचिपूर्ण होगी।

टी. महेश्वर राव
उप महाप्रबंधक, सेंट्रल बैंक, नई दिल्ली

संपादकीय

साथियो,

राजा भर्तृहरि के नीतिशतक का श्लोक है -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता ।

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है। हम अपने बैंक की ''राजभाषा अंकुर'' पत्रिका का जुलाई-सितंबर 2016 अंक ''महिला-सशक्तिकरण'' विशेषांक की संकल्पना के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारा देश पुरातन काल से ही मातृभूमि एवं मातृशक्ति का अधिष्ठाता रहा है। किंतु बीच में संक्रमण काल का दौर भी आया, जब नारी को विभिन्न कुप्रथाओं तथा कुविचारों का शिकार होना पड़ा लेकिन नारी ने हार नहीं मानी। आज भी लैंगिक असमानता के कारण समाज में संतुलन बिगड़ रहा है। किंतु नारी जिस सृजन शक्ति को धारण किए हुए है, उसके आगे समस्त सृष्टि नतमस्तक है। चाहे पुरातन काल हो या वर्तमान, स्वतंत्रता संग्राम हो या आधुनिक समाज, धार्मिक आंदोलन हो या समाज सेवा, नारी ने बहुमुखी प्रतिभा के बल पर अपनी उपस्थिति प्रत्येक क्षेत्र में दर्ज कराई है।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नारी उत्थान को ध्यान में रखकर कई योजनाओं का शुभारंभ किया है, जिनमें हमारे बैंक ने भी बढ़-चढ़कर योगदान दिया है। इसी कड़ी में हम प्रस्तुत अंक में विभिन्न लेखों, कहानियों एवं कविताओं के माध्यम से नारी के बहु-आयामी व्यक्तित्व को साकार कर रहे हैं। इस अंक में अन्य लेखों के साथ-साथ आपको ''बैंकिंग क्षेत्र में महिलाओं का योगदान'' तथा ''स्वर-कोकिला लतामंगेशकर'', लेख अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेंगे। पत्रिका में आरंभ किया गया नया स्तंभ ''ग्राहक के मुख से'' बैंक तथा ग्राहक के रिश्तों को सुदृढ़ करने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाएगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इसके साथ ही पत्रिका, अपने राजभाषा संबंधी दायित्वों का निर्वहन करते हुए हिंदी दिवस, हिंदी कार्यशाला आदि के छायाचित्रों के साथ-साथ प्रादेशिक भाषा की श्रृंखला में इस बार तमिल भाषा में कविता (हिंदी रूप के साथ) प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका के बहुआयामी विकास के लिए आप सभी की सहभागिता अपरिहार्य है।

आशा है 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं जिससे पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जा सके।

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

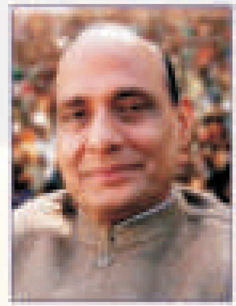

राजनाथ सिंह

RAJNATH SINGH

गृह मंत्री, भारत

HOME MINISTER, INDIA

संदेश

प्रिय देशवासियो!

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है और साथ ही संपूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी होती है। इस संबंध में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने हिंदी भाषा के बारे में अपना उद्गार व्यक्त किया था कि "हिंदी को राष्ट्र भाषा घोषित करने में एक दिन की देरी भी देश को भारी सांस्कृतिक नुकसान पहुंचाना है। राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र का बोध नहीं हो सकता।" राष्ट्रीयता, भारतीयता और एकता हिंदी का मूल स्वर है और राजभाषा हिंदी सरकार एवं संपूर्ण देश की आम जनता के बीच में संवाद की भाषा होकर अपनी सार्थक भूमिका निभा रही है। इस प्रकार हिंदी को राष्ट्रीय स्वाभिमान का अंग एवं प्रेरणा स्रोत के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त समझते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इसी अनुक्रम में 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी होगी एवं इसकी लिपि देवनागरी होगी।

विश्व में भारत भूमि में सर्वप्रथम सभ्यता एवं संस्कृति का उद्गम हुआ। जिस भारत भूमि में सांख्य दर्शन, योग, आयुर्वेद प्रणाली, ज्योतिष विज्ञान, ग्रह-नक्षत्रों की दूरी, काल की गणना जैसे ज्ञान से परिपूर्ण विषयों पर उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हुआ हो, उस देश की भाषाओं का अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी जड़ें कितनी गहरी, समुन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिकतापूर्ण हो सकती हैं। भारतीय भाषाओं की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

आज की उदारीकृत अर्थव्यवस्था के युग में देश को अशिक्षा, बेरोजगारी और गरीबी से उबारने के लिए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे अनेक क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की नितांत आवश्यकता है। लेखक और प्रकाशक राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को सभी भारतीयों तक पहुंचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

भारत सरकार के सभी कार्यालयों में सरकारी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि यह सभी के लिए बोधगम्य हो तथा इसका प्रयोग बहु-आयामी हो सके। यह याद रखना आवश्यक है कि संघ की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य सरकारी कार्य मूल रूप से हिंदी में करना है। मूल रूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा। इस दिशा में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए दो महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने आवश्यक हैं। पहला, मैं विशेष रूप से केंद्र सरकार में कार्यरत सभी वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह करता हूं कि वे स्वयं अपना रोजमर्रा का सरकारी कामकाज हिंदी में करें ताकि अन्य सभी कार्मिकों को भी ऐसा करने की प्रेरणा मिले। दूसरा, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए मैं केंद्र सरकार के सभी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों से अनुरोध करता हूं कि वे राजभाषा विभाग द्वारा 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों के लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हिंदी माध्यम में करें। इस प्रयोजनार्थ व्यावहारिक कार्य-योजना बनाकर गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है।

मैं यह अपील करता हूं कि राजभाषा विभाग को भेजी जाने वाली हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों व अन्य अपेक्षित रिपोर्टों में वास्तविक और तथ्यपरक आंकड़े एवं सूचनाएं ही दी जाएं। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह दृढ़ संकल्प लें कि हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य पूर्ण उत्साह, लगन और गर्व के साथ राजभाषा हिंदी में करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक, सार्थक एवं अथक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त करेंगे और देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को नए आयाम देंगे।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2016

राजनाथ सिंह

अरुण जेटली
वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री
भारत

Arun Jaitley
Minister of Finance & Corporate Affairs
India

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी शुभकामनाएं।

हिंदी करोड़ों लोगों की भाषा है। सदियों पहले शुरू हुई हिंदी की यात्रा में खुसरो से लेकर तुलसी-जायसी-कबीर-रसखान तो शामिल रहे ही, आधुनिक युगीन साहित्यकारों ने भी अपनी कलम के हुनर से जनमानस की भाषा को नई ऊर्जा दी। देश के स्वतंत्र होने के बाद, भारतीय संविधान ने इसे राजभाषा का दर्जा देकर इसकी महत्ता को स्वीकारा। इस तरह सांस्कृतिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों को जोड़ने की क्षमता रखने वाली यह जीवंत भाषा शासकीय कार्य प्रक्रिया का हिस्सा भी बन गई। हिंदी को देश की सामासिक संस्कृति के वाहक के रूप में स्वीकार किए जाने के कारण इसका स्वरूप और व्यापक हो गया है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों की सहायता से सरकारी नीतियों और योजनाओं के बारे में जनता को अवगत कराने और इस प्रकार सरकारी तंत्र में पारदर्शिता लाने में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी जनसंपर्क और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में भी एक सशक्त कड़ी का काम कर रही है।

हिंदी दिवस के अवसर पर, मैं वित्त मंत्रालय तथा इसके सभी सम्बद्ध कार्यालयों, उपक्रमों, वित्तीय संस्थाओं एवं विनियामक निकायों के अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह करता हूं कि वे अपनी सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। भाषा जितनी सहज और सरल होगी, भाव-संप्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होगा। सरकारी कामकाज में सहज, सरल और सुबोध हिंदी का प्रयोग करें ताकि यह जनता की भाषा बनी रहे।

आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने में अपने सांविधानिक और नैतिक दायित्व के निर्वहन का संकल्प लें।

अरुण जेटली

भारतीय रिज़र्व बैंक

RESERVE BANK OF INDIA

www.rbi.org.in

गवर्नर

Governor

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी शुभकामनाएं। इस अवसर पर आपसे बातें करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है।

मेरा मानना है कि लोगों के बीच संवाद के माध्यम के रूप में लोकप्रिय भाषा हिंदी हमारे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। जहां तक हमारे देश का संबंध है, इस बात का और भी अधिक महत्व है, क्योंकि हमारा देश विभिन्न भाषा-भाषी कई समुदायों और संस्कृतियों का संगम है। हमारे बहुभाषी देश के अनेक हिस्सों में हिंदी बोली और समझी जाती है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था और इसलिए हर साल हम 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

जहां तक बैंकिंग क्षेत्र का संबंध है, दिनों-दिन हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग इस क्षेत्र में बढ़ रहा है। ऐसा हिंदी के केवल राजभाषा होने से नहीं है बल्कि इसलिए है कि यह बाजार में बैंकिंग के प्रवेश और समग्र व्यवसाय में बढ़ोतरी लाने की क्षमता रखती है। वस्तुत: हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन को और अधिक प्रभावी बनाने में अग्रणी भूमिका अदा कर सकती हैं। यह ही नहीं वे हमारे देश के हर एक कस्बे और दूर-दराज के गाँवों में रहने वाले उन नागरिकों तक बैंकिंग सुविधाओं को पहुंचा सकती हैं जो अभी तक इस दायरे में शामिल नहीं हो पाए हैं।

आइए, हिंदी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि पूरी निष्ठा के साथ राजभाषा नीति को लागू करने में सतत सहयोग देते रहेंगे और अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाकर देश के विकास में सहभागी बनेंगे।

आप सभी को हिंदी दिवस की पुन: शुभकामनाएं

डॉ. ऊर्जित आर. पटेल

केन्द्रीय कार्यालय भवन, 18वीं मंज़िल, शहीद भगतसिंह मार्ग, मुम्बई - 400 001, भारत
फोन : +91 22 22660868 फैक्स : +91 22 2266 1784 ई-मेल : urjapatel@rbi.org.in

Central Office Building, 18th Floor, Shahid Bhagat Singh Marg, Mumbai - 400 001, INDIA
Tel. : +91 22 22660868 Fax : +91 22 2266 1784 E-mail : urjapatel@rbi.org.in

हिंदी आसान है, इसका प्रयोग बढ़ाइए

साक्षात्कार

उप महाप्रबंधक (आई.टी.)

सुश्री हरविन्द्र सचदेव

दिनांक 29 अप्रैल, 1983 को पंजाब एण्ड सिंध बैंक के प्रधान कार्यालय में बी.एस.आर.बी. के माध्यम से चयनित होकर प्रोबेशनरी अधिकारी के पद पर प्रधान कार्यालय सूचना प्रौद्योगिकी विभाग में कार्यग्रहण करने वाली सुश्री हरविन्द्र सचदेव पदोन्नत होकर आजादपुर, आई.पी.डी., पश्चिम विहार आदि कई शाखाओं, विदेशी विनिमय विभाग, निवेश प्रबंधन विभाग एवं आंचलिक कार्यालय-गुड़गांव तथा दिल्ली-2 में बतौर आंचलिक प्रबंधक तथा इस समय प्रधान कार्यालय विभाग में उप महाप्रबंधक (आई. टी.) के पद पर कार्यरत हैं। श्रीमती सचदेव बैंक की प्रथम महिला अधिकारी हैं जो पदोन्नत होकर उप महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं। उनके साक्षात्कार के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं :

समाज में स्त्री की भूमिका अति विशिष्ट भूमिका है, आपके अनुसार आप किस भूमिका को विशेष मानती हैं?

हमारे समाज में स्त्री को हमेशा उसकी भूमिका के साथ जोड़ कर देखा जाता है। प्रमुख रूप से वो किसी की बेटी, किसी की पत्नी, किसी की मां या बहन के रूप में ही पहचानी जाती है। स्त्री ही है जो परिवार को, समाज को बांध कर रखती है और अपनी हर भूमिका को पूरी ईमानदारी से निभाती है। एक मां के रूप में उसकी भूमिका सबसे अहम होती है। केवल मां ही है जो अपनी संतान को ऐसे संस्कार देती है कि वह एक अच्छे इंसान के रूप में परिवार एवं समाज को और बेहतर बनाने में योगदान दे सके।

आपने बैंक में लगभग 33 वर्षों की नौकरी की है, बैंक में महिलाओं की स्थिति के बारे में आपकी क्या राय है?

मेरा मानना है कि महिलाओं के लिए बैंकों में कार्य करने के लिए बहुत ही सुरक्षित संस्थान हैं। पी.एस.बी. में हम एक परिवार की तरह हैं, जहां पर महिलाओं के लिए हर सम्भव सहयोग प्रदान किया जाता है। बैंक के प्रबंधन वर्ग ने मुझे 'सेक्सुअल हरासमेंट कमेटी' का प्रभारी बनाया है।

आज महिला प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी है, वह एक पायलट के रूप में आकाश की ऊंचाइयों को छू सकती है। एक पर्वतारोही के रूप में हिमालय की चोटियों को छू सकती है। बैंकिंग उद्योग में महिलाएं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक पद पर भी कार्यरत हैं, जहां पर बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है।

बैंक में कार्यग्रहण करने के पश्चात आपने बैंक और परिवार का तालमेल कैसे बैठाया ?

मुझे विवाहोपरांत भी संयुक्त परिवार में ही रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मेरे पति तथा बेटा दोनों चिकित्सा क्षेत्र में हैं। हम दोनों ने एक दूसरे को सहयोग प्रदान किया। सभी को सादगी पसन्द है। आज मैं इस ओहदे पर अपने परिवार के सहयोग तथा अपनी लगन एवं मेहनत की बदौलत पहुंच पाई हूं।

एक उच्चाधिकारी होने के नाते राजभाषा हिंदी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति आपके क्या विचार हैं ?

बैंकिंग को घर-घर पहुंचाना है तो हमें ग्राहक के साथ ग्राहक की भाषा में ही व्यवहार करना होगा। राजभाषा हिंदी राष्ट्र स्तर पर है पर हमें लोकल लेवल पर क्षेत्रीय भाषाओं को साथ लेकर चलना होगा।

अपने सहकर्मियों, महिलाओं के लिए क्या संदेश देना चाहेंगी।

आज महिलाओं को कार्य के प्रति पूर्ण रूप से ईमानदार होकर कार्य करना चाहिए तथा महिला होने का नाजायज फायदा नहीं उठाना चाहिए, क्योंकि जहां से हम अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं, हमें उसके साथ पूरा-पूरा न्याय करना चाहिए। महिला स्टाफ को अपने पुरुष सहकर्मियों के साथ मर्यादाओं में रहते हुए पूर्ण निष्ठा से कार्य करना चाहिए तथा उन्हें पूरा आदर-सम्मान देना चाहिए।

प्रस्तुति :

श्री कंवर अशोक, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

ग्राहक के मुख से

किसी भी वित्तीय संस्थान का मुख्य उद्देश्य ग्राहक सेवा द्वारा आर्थिक जगत में अपनी एक अलग साख/पहचान बनाना होता है। प्रतियोगिता के इस युग में सभी वित्तीय संस्थान अपने-अपने स्तर पर ग्राहकों को लुभाने के लिए विभिन्न सुविधाएं प्रदान करके ग्राहकों को आकर्षित करने में लगे हुए हैं। इन्हीं वित्तीय संस्थानों के बीच एक संस्थान, जो पिछले कई वर्षों से अपनी सेवाओं के द्वारा ग्राहकों की वित्तीय आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं कर रहा बल्कि उनकी अपेक्षाओं की कसौटी पर भी खरा उतर रहा है। पंजाब एण्ड सिंध बैंक हमेशा से ही एक ग्राहकोन्मुख बैंक रहा है। तभी इस बैंक का प्रचार वाक्य भी सबसे अलग है ''जहां सेवा ही जीवन ध्येय है।'' इसी उक्ति को सिद्ध करते हुए हमारे बैंक ने हमेशा जनसाधारण को वित्तीय सेवाएं प्रदान कर, उनकी समृद्धि में अपना अमूल्य योगदान दिया है। फरीदकोट की दि माल शाखा में प्रतिष्ठित ग्राहक श्री मंगत राम के सुपुत्र श्री बरजिन्द्र गर्ग जी से जब हमारी मुलाकात हुई तो उन्होंने कुछ इस प्रकार हमें अपनी कहानी सुनाई :

बरजिन्द्र गर्ग

जैसा कि आप जानते ही हैं कि मेरी फर्म का नाम ताऊ एग्रो सेल्स प्राइवेट लिमिटेड है। मैं आपके बैंक से सन् 1992 से जुड़ा हुआ हूं। मुझे याद है कि सन् 1992 में जब मेरे पिताजी व्यवसाय के बहुत ही मुश्किल दौर से गुज़र रहे थे तब उन्होंने बहुत सी वित्तीय संस्थाओं के चक्कर लगाए और कहीं से भी उन्हें किसी भी आर्थिक मदद का भरोसा नहीं दिया गया। आखिर एक दिन उन्होंने पंजाब एण्ड सिंध बैंक की ओर रुख किया। मुझे खुशी होती है यह बताते हुए कि आपके शाखा प्रबंधक ने मेरे पिताजी की व्यावसायिक परख को समझते हुए उन्हें वित्तीय सहायता देने का निश्चय किया। पंजाब एण्ड सिंध बैंक की इस पहल के कारण पिताजी को एक नई आशा की किरण मिली और उसके बाद कभी उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उस समय बैंक से हमें 40 लाख रुपए की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई थी। हमारे पास सिर्फ 6 से 7 कर्मचारी हुआ करते थे जो आज 250 हो चुके हैं और आज बैंक में हमारी फर्म की 15 करोड़ की लिमिट चल रही है। कहना न होगा कि आज फरीदकोट में मेरी फर्म एक जाना पहचाना नाम बन चुकी है और व्यवसाय जगत में एक अलग पहचान बना चुकी है। मैं आपके बैंक का शुक्रगुज़ार हूं कि उस समय मेरे पिताजी की समझ को पहचानते हुए हमारी आर्थिक सहायता की और मैं आज बैंक के सम्मानीय ग्राहकों की श्रेणी में हूं।

केन्द्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड की प्रथम महिला अध्यक्ष – **आशा पारिख**

बैंकिंग उद्योग में महिलाओं का योगदान

जगमोहन सिंह सक्सेना

भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें समय के साथ-साथ परिवर्तन होते रहे हैं। उनकी स्थिति में पुरातन (वैदिक) काल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं तथा उनके अधिकारों में समय के अनुसार बदलाव भी होते रहे हैं। यह माना जाता है कि स्त्रियों ने ही प्रथम सभ्यता की नींव डाली, और उन्होंने ही जंगलों में मारे-मारे भटकते हुए पुरुषों को उच्चस्तर का जीवन प्रदान किया तथा घरों में रहना सिखाया। भारत में सैद्धान्तिक रूप से स्त्रियों को उच्च दर्जा दिया गया है। हिंदू आदर्श के अनुसार स्त्रियाँ अर्धांगिनी कही गयी हैं। मातृत्व का आदर भारतीय समाज की विशेषता है। विभिन्न कालों में महिलाओं की स्थिति विभिन्न रही है। वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। उन्हें देवी के बराबर सम्मान दिया जाता था। उन्हें शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। संपत्ति में उनको बराबरी का हक प्राप्त था। वे सभा व समितियों में से स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेती थीं।

महिलाओं की अवनति उत्तर वैदिककाल से शुरू हुई। उन पर अनेक प्रकार की अक्षमताओं व असमर्थताओं का आरोप लगा दिया गया। उनके लिए निंदनीय शब्दों का प्रयोग होने लगा। उनकी स्वतंत्रता और उन्मुक्तता पर अनेक प्रकार के अंकुश लगाए जाने लगे। मध्यकालीन युग में मुगल साम्राज्य के समय महिलाओं की दशा और भी दयनीय हो गई। हिंदू धर्म की रक्षा के लिए उस वक्त के धार्मिक कट्टरपंथियों ने स्त्रियों के मातृत्व और अस्मिता की रक्षा के लिए स्त्रियों के संबंध में नियमों को कठोर बना दिया। पर्दा प्रथा इस सीमा तक बढ़ गई की स्त्रियों के लिए कठोर एकांत नियम बना दिए गए। शिक्षा की सुविधा लगभग पूर्णरूप से समाप्त हो गई। विधवाओं का पुनर्विवाह पूरी तरह समाप्त हो गया और सती-प्रथा चरम सीमा पर पहुँच गई।

महिलाओं के पुनरोत्थान का काल ब्रिटिश काल से शुरू हुआ। इस काल में हमारे समाज की सामाजिक व आर्थिक संरचनाओं में अनेक परिवर्तन किए गए। ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों की अवधि में स्त्रियों के जीवन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनेक सुधार आए। औद्योगीकरण, शिक्षा का विस्तार, सामाजिक आंदोलन व महिला संगठनों का उदय व सामाजिक विधानों ने स्त्रियों की दशा में बड़ी सीमा तक सुधार की ठोस शुरूआत की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तो महिलाओं की दशा में भारी बदलाव आया। भारतीय संविधान के अनुसार उसे पुरुष के बराबर अधिकार प्राप्त हुए। स्त्री शिक्षा पर बल देने के लिए स्त्रियों के लिए निःशुल्क शिक्षा एवं छात्रवृत्ति की व्यवस्था हुई। वस्तुतः इक्कीसवीं सदी महिला सदी कही जा सकती है। वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया। इसमें महिलाओं की क्षमताओं और कौशल का विकास करके उन्हें अधिक सशक्त बनाने तथा पूर्ण समाज को महिलाओं की स्थिति और भूमिका के संबंध में जागरूक बनाने के प्रयास किए गए और 2001 में ही महिला सशक्तीकरण हेतु प्रथम बार "राष्ट्रीय महिला" उत्थान नीति बनाई गई जिससे देश में महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास संभव हो सके। इसमें आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समान आधार पर महिलाओं द्वारा समस्त मानवाधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं का सैद्धांतिक तथा वस्तुतः उपभोग पर तथा इन क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी व निर्णय स्तर तक बराबरी पर बल दिया गया है।

इक्कीसवीं शताब्दी में भारतीय नारी अपनी लक्ष्मण रेखाओं को तोड़ अबलापन की भावना से हटकर विकास के पथ पर बढ़ रही है। वर्तमान युग या आज के समय की बात करें तो इसमें कोई दो राय नहीं कि स्त्रियों की स्थिति पहले से बहुत अच्छी है, लगभग सभी देशों में स्त्री ने पुनः अपनी शक्ति का लोहा मनवाया है। जिसका उदाहरण है कि महिलाएं आज कई देशों की व बड़े-बड़े कार्पोरेट घरानों की प्रमुख हैं। हम कह सकते हैं कि आज का युग स्त्री-जागरण का युग है। भारत के सर्वोच्च पद (राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री) को भी स्त्रियों ने सुशोभित किया है। वर्तमान में नारी शक्ति का फैलाव इतना बढ़ गया है कि कोई भी क्षेत्र इनके संपर्क से अछूता नहीं है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा, इन्जीनीयरिंग, अंतरिक्ष, सेना, पुलिस, प्रशासन, व्यापार, समाज सुधार, पत्रकारिता, मीडिया, कला एवं

देश की प्रथम महिला बैरिस्टर — **कोर्नीलिया सोराबजी** (इलाहाबाद उच्च न्यायालय 1923)

क्षेत्र का क्षेत्र हो, नारी की उपस्थिति, योग्यता एवं उपलब्धियां स्वयं अपना प्रत्यक्ष परिचय प्रस्तुत कर रही हैं। घर परिवार से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक उसकी विजयी पताका लहरा रही है।

दोहरे दायित्वों से लदी (गृहणी के साथ-साथ उद्यमी) महिलाओं ने अपनी दोगुनी शक्ति का प्रदर्शन कर, सिद्ध कर दिया है कि समाज की उन्नति, आज केवल पुरुषों के कन्धे पर नहीं, अपितु उनके हाथों का सहारा लेकर भी ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होती है। आर्थिक स्तर पर महिलाओं ने स्वयं उद्यमी बनकर राष्ट्रीय विकास करते हुए अपनी विश्वव्यापी पहचान बनाई है। आज विभिन्न तकनीकी संस्थानों में महिलाएं बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। उनमें आत्मगौरव, आत्मविश्वास व साहस का संचार हुआ है और देश के आर्थिक विकास में योगदान दे रही हैं। आज हजारों महिलाएं देश के आर्थिक विकास की दिशा में अहम भूमिका निभा रही हैं। राष्ट्र के समग्र विकास तथा उसके निर्माण में महिलाओं का लेखा-जोखा और उनके योगदान का दायरा असीमित है तथापि देश के चहुँमुखी विकास तथा समाज में अपनी भागीदारी को उसने सशक्त ढंग से पूरा किया है। अपने अस्तित्वों की स्वतंत्रता कायम रखते हुए वह पुरुषों से भी चार कदम आगे निकल गई है। संकीर्णता, जात-पात, धार्मिक कट्टरता, भेदभाव, मानसिक गुलामी की जंजीरों को तोड़कर महिलाओं ने देश को एक नई सोच, नया विचार प्रदान किया है।

भारतीय बैंकिंग के क्षेत्र में भी महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने के अलावा एक निर्णायक और अहम भूमिका निभा रही हैं। वास्तव में बैंकिंग के इस क्षेत्र में महिलाएं शीर्ष स्थानों तक पहुँचने में कामयाब हो रही हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक के डिप्टी गवर्नर जैसे उच्च पद पर पहुँची सबसे पहली महिला श्रीमती के. जे. उदेशी, उनके बाद श्रीमती श्यामला गोपीनाथ एवं तीसरी महिला श्रीमती उषा थोरात रही हैं।

महिला सशक्तीकरण का सबसे बड़ा उदाहरण सुश्री अंजुलि चिब दुग्गल जो भा.प्र.सेवा के 1981 बैच, पंजाब कैडर की हैं और भारत

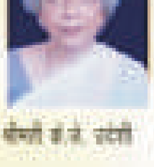
श्रीमती के.जे. उदेशी

श्रीमती श्यामला गोपीनाथ

अंजुलि चिब दुग्गल

श्रीमती उषा थोरात

सरकार के वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवाएं विभाग में सचिव के पद पर तैनात हैं तथा वित्त मंत्री को सीधा रिपोर्ट करती हैं जिनके नियंत्रण में भारत की सम्पूर्ण बैंकिंग और गैर बैंकिंग संस्थाएं तथा अन्य वित्तीय संस्थाएं जैसे बीमा, पेंशन सुधार आदि कार्य कर रही हैं। अपने वर्तमान पदभार संभालने से पहले वे सचिव, कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय, भारत सरकार के रूप में कार्य करती थीं। वे व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय में विशेष, अपर सचिव और संयुक्त सचिव के रूप में भी कार्य कर चुकी हैं।

सुश्री अंजुलि चिब दुग्गल के अलावा भी भारतीय बैंकिंग उद्योग में आजकल महिलाएं छाई हुई हैं बैंकों के कुल कारोबार के लगभग 40 प्रतिशत से ज्यादा पर महिलाओं का नियंत्रण है। देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक समूह एवं पंजाब नेशनल बैंक की अध्यक्ष क्रमशः श्रीमती अरुंधति भट्टाचार्य तथा उषा अनंत सुब्रह्मण्यन महिला हैं और तो और, निजी क्षेत्र के दूसरे सबसे बड़े बैंक आईसीआईसीआई बैंक तथा एक्सिस बैंक की प्रबंध निदेशक और सी.ई.ओ श्रीमती चंदा कोचर एवं श्रीमती शिखा शर्मा महिला हैं। इसके साथ ही एक और महिला सुश्री नैना लाल किदवई, विदेशी बैंक एचएसबीसी इंडिया की कंट्री हेड के साथ ही बोर्ड में कार्यकारी निदेशक के पद पर भी कार्यरत हैं।

सुश्री अरुंधति भट्टाचार्य, अध्यक्ष, भारतीय स्टेट बैंक

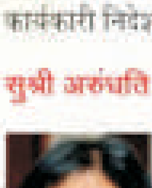

सुश्री अरुंधति भट्टाचार्य को देश के सबसे बड़े बैंक की पहली महिला अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त हुआ है। अरुंधति ने वर्ष 1977 में भारतीय स्टेट बैंक में एक प्रोबेशनरी अधिकारी के रूप में अपनी नौकरी शुरू की थी।

बैंक के साथ 36 वर्षों के अपने लंबे कैरियर के दौरान अरुंधति ने कई महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दीं। वे बैंक की व्यापारिक बैंकिंग शाखा - एसबीआई कैपिटल्स मार्केट्स की मुख्य कार्यकारी अधिकारी रहने के अलावा नई परियोजनाओं की देखभाल हेतु मुख्य महाप्रबंधक के पद पर भी रहीं। इसके अलावा वे एसबीआई जनरल इंश्योरेंस, एसबीआई कस्टोडियल सेवाओं और एसबीआई मैक्वेरी इंफ्रास्ट्रक्चर फंड जैसे कई नए व्यवसायों के शुभारंभ में बेहद सक्रिय रूप से शामिल रही हैं। अध्यक्ष पद पर आसीन होने से पहले वे भारतीय स्टेट बैंक में प्रबंध निदेशक और मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं।

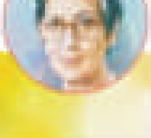

सुश्री उषा अनंतसुब्रह्मण्यन

सुश्री उषा अनंतसुब्रह्मण्यन ने 14 अगस्त 2015 को पंजाब नैशनल बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ का प्रभार ग्रहण किया। इस बैंक से जुड़ने से पहले, वह भारतीय महिला बैंक की अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक थीं। जुलाई 2011 से नवंबर 2013 तक वे पंजाब नैशनल बैंक की कार्यपालक निदेशक थीं। वे पहली महिला केंद्रित बैंक की स्थापना हेतु ब्लू प्रिंट एवं अन्य संबंधित कार्यों की जांच के लिए गठित समिति की सदस्य रहीं और भारतीय महिला बैंक की स्थापना की प्रक्रिया के समन्वय के लिए वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित कोर प्रबंधन टीम की प्रमुख थीं। उषा जी ने मद्रास विश्वविद्यालय से सांख्यिकी में और मुंबई विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय संस्कृति में मास्टर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने बैंक ऑफ बड़ौदा में एक विशेषज्ञ अधिकारी के रूप में फरवरी 1982 में अपने बैंकिंग कैरियर की शुरुआत की एवं पदोन्नति प्राप्त कर महाप्रबन्धक के पद तक पहुँचीं अपने 34 वर्षों से अधिक के पूरे कैरियर में उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया और व्यापक बहुमुखी बैंकिंग अनुभव प्राप्त किया।

सुश्री चंदा कोचर

सुश्री चंदा कोचर, भारतीय उद्योग जगत और बैंकिंग के क्षेत्र में जाना माना नाम। जिन्होंने अपनी मेहनत, विश्वास और लगन से पुरुष प्रधान बैंकिंग क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई। 1984 में मास्टर डिग्री लेने के बाद चंदा ने आईसीआईसीआई लिमिटेड के साथ मैनेजमेंट ट्रेनी के रूप में अपने व्यावसायिक जीवन का प्रारंभ किया और अपने काम और अनुभव के साथ-साथ वे लगातार आगे बढ़ती गई। उन्होंने 1990 के दशक में आईसीआईसीआई बैंक को स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और तत्पश्चात बैंक के इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस और कॉर्पोरेट बैंकिंग के कारोबार को अच्छी तरह से संभाला। वर्ष 2000 में उन्होंने प्रौद्योगिकी, नई तकनीक, प्रक्रिया पुनर्संरचना और विस्तार पर अपना ध्यान निवेश करते हुए उन्होंने आईसीआईसीआई बैंक को सफलता के नए आयामों तक पहुँचाया। उनके नेतृत्व में ही बैंक ने अपने रिटेल बिज़नेस की शुरुआत की। यह उनके ही करिश्माई नेतृत्व का कमाल था कि बैंक इस क्षेत्र में बेहद कामयाब रहा और सबसे आगे रहा। वर्ष 2001 में वे आईसीआईसीआई बैंक के निदेशक मंडल में शामिल हुई। वर्ष 2009 में उन्हें आईसीआईसीआई बैंक की प्रबंध निदेशक बनाने के अलावा मुख्य कार्यकारी अधिकारी का प्रभार भी सौंपा गया और उसके बाद से वे भारत और विदेशों में होने वाली बैंक की हर गतिविधि की जिम्मेदारी को संभाल रही हैं। इसके अलावा वे बैंक की सभी प्रमुख सहायक कंपनियों के बोर्ड की अध्यक्ष भी हैं जिनमें भारत की निजी क्षेत्र की जीवन और सामान्य क्षेत्र की प्रमुख कंपनियां शामिल हैं। आईसीआईसीआई समूह में अपनी जिम्मेदारियों के अलावा चंदा कोचर व्यापार और उद्योग से संबंधित प्रधानमंत्री द्वारा गठित एक परिषद की सदस्य भी हैं। साथ ही वे बोर्ड ऑफ ट्रेड की सदस्य, फाइनेंसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर पर उच्च स्तरीय समिति, अमेरिका-भारत सीईओ फोरम और ब्रिटेन-भारत सीईओ फोरम की सदस्य भी हैं। चंदा इसके साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान के लिए भारतीय परिषद, राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान, अंतर्राष्ट्रीय वित्त संस्थान और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा सम्मेलन के बोर्ड की भी सदस्य हैं। वे वर्ष 2011 में आयोजित हुए विश्व आर्थिक मंच की वार्षिक बैठक की सह अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। चंदा को वर्ष 2011 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान में से एक पद्म भूषण से भी सम्मानित किया जा चुका है। फोर्ब्स पत्रिका में दुनिया की सशक्त महिलाओं की सूची में भी इनका नाम आ चुका है।

सुश्री शिखा शर्मा

सुश्री शिखा शर्मा ने वर्ष 2009 से एक्सिस बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी का कार्यभार सम्भाला। शिखा शर्मा ने दिल्ली विश्वविद्यालय के 'लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमेन' (LSR) से अर्थशास्त्र में बीए (ऑनर्स) किया। तत्पश्चात मशहूर प्रबंधन संस्थान 'आईआईएम अहमदाबाद' से एमबीए किया। उसके बाद मुंबई के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी से सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा भी किया। शिखा शर्मा ने अपने करियर की शुरुआत 1980 में आईसीआईसीआई से की थी। वे वहां विभिन्न प्रोजेक्टों से जुड़ी रहीं। इसके बाद वे आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी की मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ भी रहीं। उनकी उपलब्धियों के लिए उन्हें

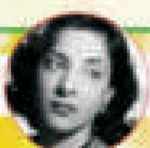

विश्व स्तर पर मान्यता मिली और वे विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी हैं। 2012 में आयोजित हुए एआईएमए के मैनेजिंग इंडिया अवार्ड्स में 'वर्ष की परिवर्तनकारी बिज़िनेस लीडर', उसी वर्ष ब्लूमबर्ग-यूटीवी फाइनेंशियल लीडरशिप अवार्ड्स में 'वोमेन लीडर ऑफ द ईयर' का पुरस्कार जीतने के साथ वे वर्ष 2012 में ही बिज़िनेस वर्ल्ड बैंकर ऑफ द ईयर से भी सम्मानित हो चुकी हैं। इसके अलावा उन्हें कुछ प्रमुख प्रकाशनों में भी उल्लेखनीय स्थान मिला है। वर्ष 2012 की फोर्ब्स की एशिया की 50 सशक्त बिज़नेस महिलाओं की सूची में स्थान मिलने के अलावा इंडियन एक्सप्रेस की ओर से वर्ष 2012 के शक्तिशाली भारतीयों में भी शामिल रही हैं। साथ ही शिक्षा इंडिया टुडे की वर्ष 2012 की प्रभावशाली महिलाओं की पॉवर लिस्ट में भी शामिल हो चुकी हैं।

सुश्री नैना लाल किदवई

सुश्री नैना लाल किदवई एचएसबीसी इंडिया की कंट्री हेड होने के अलावा बोर्ड में कार्यकारी निदेशक के पद पर भी कार्यरत हैं। वे पहली भारतीय महिला हैं जिन्होंने किसी विदेशी बैंक का भारत में संचालन किया। नैना ने शिमला से स्कूली शिक्षा और दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक व हार्वर्ड बिज़िनेस स्कूल से एमबीए करने के बाद 1982 में 'स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक से कैरियर की शुरुआत की। उन्होंने कुछ दिन मोर्गन स्टेनले बैंक में भी काम किया और फिर एचएसबीसी से जुड़ गईं। उन्हें भारत समेत कई अन्य देशों में नेतृत्व और व्यापार में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए 2007 में भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उनका नाम फॉर्च्यून पत्रिका 2000-2003 में विश्व की शीर्ष 50 कॉर्पोरेट महिलाओं की सूची में 2002 फॉर्च्यून पत्रिका में विश्व की 50 सशक्त महिलाओं की सूची में और 2003 में बिज़नेस टुडे की 'कारोबार' में सबसे शक्तिशाली 25 महिलाओं की सूची में भी आ चुका है। 2013 में बैंकिंग में उत्कृष्टता के लिए दिल्ली की सभी महिलाओं की लीग में दशक की महिला का अवार्ड भी उन्हें प्राप्त हुआ है। एचएसबीसी इंडिया के अलावा वे विश्वस्तर पर कई अन्य कंपनियों के साथ भी जुड़ी हुई हैं। नेस्ले एसए के बोर्ड पर गैर कार्यकारी निदेशक के रूप में जुड़ी होने के अलावा वे सिटी ऑफ लंदन्स एडवायज़री काउंसिल फॉर इंडिया की अध्यक्ष, हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल की वैश्विक सलाहकार होने के अलावा भारतीय सलाहकार बोर्ड की अध्यक्ष भी हैं। नैना किदवई भारतीय ग्रामीण महिलाओं के लिए लघु वित्त सेवाएं देते हुए और आजीविका निर्माण करने और पर्यावरण के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। वे फिक्की की अध्यक्ष भी हैं।

उपरोक्त महिलाओं के अलावा और भी कई महिलाएं बैंकों के उच्च पदों पर कार्य कर रही हैं या कार्य कर चुकी हैं जिनका परिचय नीचे करवाया जा रहा है।

श्रीमती तृष्णा गुहा

श्रीमती तृष्णा गुहा कार्यकारी निदेशक के रूप में देना बैंक में शामिल होने से पहले इलाहाबाद बैंक में महाप्रबंधक थीं। महाप्रबंधक के रूप में बैंक के व्यवसाय के विकास के हर पहलू में अपनी छाप छोड़ी। श्रीमती गुहा ने 1987 में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के साथ अपने कैरियर की शुरुआत की और दो साल बाद वह मध्य प्रबंधन ग्रेड में इलाहाबाद बैंक में शामिल हो गईं और बैंकिंग के प्रमुख क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर काम किया। उन्होंने इलाहाबाद बैंक में सीबीएस के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। एमएससी और कंप्यूटर विज्ञान में पीजीडी के साथ उन्होंने कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ-साथ देश और विदेशों में कई सेमिनारों में भाग लिया जिनमें से प्रमुख हैं बिजनेस प्रोसेस री-इंजीनियरिंग पर वार्षिक सम्मेलन 2012 में मुंबई में वित्त मंत्रालय के तत्वावधान में भारत सरकार द्वारा आयोजित 2011 में टैक्सी (आरबीआई), पुणे द्वारा किए गए बैंकों में ई-बिजनेस पर भारतीय रिज़र्व बैंक के कार्यकारी समूह की रिपोर्ट पर सम्मेलन, बैंकिंग प्रौद्योगिकी कान्क्लेव 2007 मुंबई में नवभारत टाइम्स द्वारा आयोजित, और सैन फ्रांसिस्को में सिस्को सिस्टम्स द्वारा आयोजित सिस्को LIVE 2009 वार्षिक आईटी और संचार सम्मेलन।

सुश्री एस.एम. स्वाति

सुश्री एस.एम.स्वाति भारतीय महिला बैंक लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक हैं। बैंक में पदभार संभालने से पहले वे कॉरपोरेशन बैंक की महाप्रबंधक थीं। वे कॉर्पोरेशन बैंक के ग्रामीण बैंकिंग विभाग में कृषि फील्ड ऑफिसर के रूप में सितंबर 1980 में बैंकिंग उद्योग में शामिल हुईं और महा

प्रबंधक के पद तक पहुँचीं। तीन दशकों में फैले कैरियर में, उन्होंने विभिन्न क्षमताओं में विभिन्न स्थानों में काम किया। वे दिल्ली के सर्किल हेड (उत्तर भारत) और प्रधान कार्यालय बेंगलूर(कर्नाटक) में खुदरा ऋण, विपणन, प्रचार, कॉर्पोरेट संचार और अनुसंधान डिवीजनों के प्रभारी रह चुकी हैं। उन्होंने कृषि में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। वे स्नातक (बीएससी कृषि) में स्वर्ण पदक विजेता थीं। उन्होंने सीएआईआईबी के अलावा वित्त में एमबीए भी किया हुआ है ।

सुश्री रेनू सूद कर्नाड

सुश्री रेनू सूद कर्नाड एचडीएफसी लि. (हाऊसिंग फाईनैंस) की प्रबंध निदेशक हैं। उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक की डिग्री के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री भी प्राप्त की है। वे अमरीका की प्रसिद्ध प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के वुडरो विल्सन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर से परवीन फेलो भी प्राप्त कर चुकी हैं। वे वर्ष 1978 से इस संस्थान के साथ जुड़ी हुई हैं और वर्ष 2000 में उन्हें कार्यकारी निदेशक के रूप में चुना गया। इसके बाद अक्टूबर 2007 में वे दोबारा संस्थान की संयुक्त प्रबंध निदेशक के रूप में चुनी गई। उन्हें 1 जनवरी 2010 से 5 वर्ष की अवधि के लिए संस्थान में प्रबंध निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया। इस पद पर रहते हुए वह संस्थान के संचालन, मानव संसाधन और संचार कार्यों की जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रही हैं। उन्हें वॉल स्ट्रीट जर्नल द्वारा एशिया की आने वाले समय की 10 शीर्ष महिलाओं में स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त वे ऊर्जा व अभियांत्रिकी क्षेत्र की एक मल्टीनैशनल कंपनी एबीबी लिमिटेड में स्वतंत्र निदेशक भी हैं। इनके अतिरिक्त वे 14 और कंपनियों के निदेशक मंडल की सदस्य भी हैं। इस क्षेत्र में उनके योगदान के लिए वे बिज़नेस टुडे की शक्तिशाली महिलाओं की सूची - 'हाल ऑफ फेम' और 2012 में बिज़नेस टुडे में भारतीय व्यापार जगत में सर्वाधिक शक्तिशाली महिला का सम्मान भी प्राप्त कर चुकी हैं।

सुश्री शुभलक्ष्मी पानसे

सुश्री शुभलक्ष्मी पानसे ने अक्टूबर 2012 से जनवरी 2014 तक इलाहाबाद बैंक के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में कार्य किया।

अपनी इस नियुक्ति से पहले वे नवंबर 2009 से विजया बैंक में कार्यकारी निदेशक के पद पर आसीन थीं। विजया बैंक में वे सभी विभागों के प्रबंधन का काम देखने के अलावा बैंक के प्रशासन और व्यापार के विकास के काम की जिम्मेदारी संभाल रही थी। सुश्री पानसे ने वर्ष 1976 में बैंक ऑफ महाराष्ट्र में एक प्रोबेशनरी अधिकारी के रूप में अपने बैंकिंग करियर की शुरूआत की थी। उन्होंने बैंक ऑफ महाराष्ट्र में अपने कार्यकाल के दौरान देश में कई स्थानों पर विभिन्न स्तरों पर ऋण प्रबंधन, रिकवरी, नकद प्रबंधन और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विविध विषयों में व्यापक प्रदर्शन और विशेषज्ञता के कामों को बहुत ही अच्छे ढंग से संचालित किया था। सुश्री पानसे एनआईबीएम, पुणे, एएससीआईआई एण्ड जेएदआईडीबीआई, हेदराबाद, एमडीआई गुड़गांव, बीटीसी एंड आरबीआई, मुंबई, यूरोपियन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, लंदन, ब्रिटेन, पेरिस और फ्रांस, बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट, स्विटजरलैंड और बहरीन के कई प्रतिष्ठित संस्थानों से विभिन्न पाठयक्रम और प्रशिक्षण भी ले चुकी हैं।

बैंकिग के क्षेत्र में उनके उललेखनीय योगदान को ध्यान में रखते हुये पुणे नगर निगम में उन्हें वर्ष 2000 में सम्मानित किया था। इसके अलावा वे विभिन्न पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2005 में इन्हें मुंबई की विसिटेक्स फाउंडेशन द्वारा बैंकर ऑफ द ईयर, मई 2008 में राजीव गांधी फाउंडेशन, उड़ीसा द्वारा बैंकिंग के आईटी क्षेत्र में योगदान के लिए राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार, जून 2008 में एमईएस सोसायटी पुणे द्वारा बैंकिंग में आईटी के क्षेत्र में योगदान के लिए नारी चेतना पुरस्कार और बैंकिंग और वित्त के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए वर्ष 2011 में सूर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ।

उपरोक्त महिलाएं गिनती में भले ही बहुत कम हैं फिर भी जिस प्रकार भारतीय नारी के कदम आगे बढ़ रहे हैं आशा की जानी चाहिए कि आने वाले समय में बैंकिंग उद्योग के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी बहुत बड़ी गिनती में पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए उन्नती के शिखर पर विराजमान होंगी ।

पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक

भारतीय संविधान में महिलाओं के अधिकार

1.	अनु. 14	विधि के समक्ष समता जिसमें महिलाएं शामिल हैं।
2.	अनु. 15(i)	राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश, जाति लिंग, जन्मस्थान या इसमें किसी से किसी के आधार पर कोई विभेद नहीं करेगा।
3.	अनु. 15 (iii)	अनु. 15 की कोई बात राज्य को स्त्रियों और बालकों के लिए कोई विशेष उपबंध करने से निवारित नहीं करेगी।
4.	अनु. 11 (i)	राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से संबंधित विषयों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समानता होगी।
5.	अनु. 39 (1)	राज्य अपनी नीति का विशिष्टतया, इस प्रकार संचालन करेगा कि सुनिश्चित रूप से पुरुष एवं स्त्री सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार है।
6.	अनु. 39 (4)	पुरुषों और स्त्रियों दोनों का समान कार्य के लिए समान वेतन हो।
7.	अनु. 39 (5)	पुरुष और स्त्री कर्मकारों के स्वास्थ्य और शक्ति का तथा बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग न हो।
8.	अनु. 42	राज्य काम की न्याय संगत और मानवोचित दशाओं को सुनिश्चित करने के लिए और प्रसूति सहायता के लिए उपबन्ध करेगा।
9.	अनु. 51क (ङ)	भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भाव के परे हो। ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।
10.	अनु. 243 नं घ(3)	प्रत्येक पंचायत में प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा भरे जाने वाले स्थानों की कुल संख्या के कम से कम एक तिहाई स्थान स्त्रियों के लिए आरक्षित रहेंगे।
11.	अनु. 243 नं घ(4)	प्रत्येक स्तर पर पंचायतों में अध्यक्षों के पदों की कुल संख्या के कम से कम एक तिहाई स्त्रियों के लिए आरक्षित रहेंगे।
12.	अनु. 243 नं (3)	प्रत्येक नगरपालिका में प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा भरे जाने वाले स्थानों की कुल संख्या के कम से कम एक तिहाई स्थान स्त्रियों के लिए आरक्षित रहेंगे।
13.	अनु. 243 नं (4)	नगर पालिकाओं में अध्यक्षों के पद अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जन जातियों और स्त्रियों के लिए ऐसी रीति से आरक्षित रहेंगे, जो राज्य का विधान मण्डल, विधि द्वारा उपबंधित करें।

प्रथम भारतीय महिला क्रिकेट टीम कप्तान – **शांता रंगास्वामी** (कर्नाटक)

महिलाएं और ऑलंपिक 2016

दीपा मलिक ने रियो पैरालंपिक में रचा इतिहास

राजिंदर सिंह बेदी

30 सितंबर 1970 को जन्मी दीपा मलिक एक भारतीय एथलीट होने के साथ-साथ शॉटपुट, जेवलिन थ्रो, तैराकी एवं मोटर रैसलिंग से जुड़ी एक विकलांग भारतीय खिलाड़ी हैं। भारत की दीपा मलिक ने तब इतिहास रच दिया जब रियो ग्रीष्मकालीन पैरालंपिक में गोला फेंक (शॉटपुट) एफ-53 में रजत पदक जीतकर पैरालंपिक में पदक हासिल करने वाली देश की पहली महिला खिलाड़ी बन गईं। दीपा ने अपने छह प्रयासों में से सर्वश्रेष्ठ 4.61 मीटर गोला फेंका और यह रजत पदक हासिल करने के लिए काफी था।

36 की उम्र में ही तीन ट्यूमर सर्जरी और शरीर का निचला हिस्सा सुन्न हो जाने के बावजूद उन्होंने न केवल शॉटपुट एवं जवलीन थ्रो में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीते हैं, बल्कि तैराकी एवं मोटर रैसलिंग में भी कई स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। वे भारत की एक ऐसी पहली महिला हैं जिन्हें हिमालय कार रैली में आमंत्रित किया गया। वर्ष 2008 तथा 2009 में उन्होंने यमुना नदी में तैराकी की तथा स्पेशल बाइक सवारी में भाग लेकर दो बार लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया। यही नहीं, सन् 2008 में उन्होंने ताइवान तथा 2008 में बर्लिन में जेवलिन थ्रो तथा तैराकी में भाग लेकर रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त किए। कॉमनवेल्थ गेम्स की टीम में भी वे चयनित की गईं। पैरालंपिक खेलों में उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों तथा इतनी बड़ी उम्र में लगातार खेलों में गतिशीलता के कारण उन्हें भारत सरकार ने अर्जुन पुरस्कार प्रदान किया।

दीपा ने विभिन्न साहसिक खेलों में अपनी भागीदारी के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। 5 अक्तूबर 1993 से 13 अक्तूबर 1999 तक उन्होंने अति कठिन परिस्थितियों में रेड डे हिमालय मोटरस्पोर्ट के अंतर्गत 1700 किलोमीटर की ड्राइविंग की जिसमें शून्य से नीचे का तापमान और 18000 फुट की चढ़ाई भी शामिल थी। इस यात्रा में दुरस्थ हिमालय, लेह, शिमला और जम्मू सहित कई कठिन रास्तों को शामिल किया गया था।

दीपा का प्रेरणात्मक उद्बोधन

पिछले दिनों मैंने उनका दिया हुआ एक प्रेरणात्मक उद्बोधन सुना था। आप भी आनंद लीजिए कि समाज के उच्चवर्ग और प्रबुद्धजनों के समक्ष दिए गए दीपा के उद्बोधन के कुछ अंश:

नमस्कार, आज मैं मोटीवेटर स्पीकर के रूप में आपके सामने हूं। जब मैं पैरालाइज हुई थी तो यही कहा गया था कि बस अब तो ये घर में रह जाएगी क्योंकि छाती का निचला हिस्सा इसका बिलकुल अपंग हो चुका है। वास्तव में हमारे इर्द-गिर्द का इंफ्रास्ट्रक्चर, हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती होता है जो बहुत बड़ी नकारात्मकता से भरा होता है। तो कई बार जब मैं जीन

चेयर पर उठा कर रखी जा रही होती हूं तो लोग अक्सर कहते हैं कि हाय, बेचारी को क्या हुआ, जैसे कोई अर्थी उठा ली हो। तो मैं पलट कर कहती हूं कि क्यों महारानियों की पालकियां भी तो चार लोग उठाते हैं।

सी आई एम बेसिकली हेयर टू टेल यू, डैड गेट अप एंड ब्रेक दिस स्टीरियो टाइप। क्रिएट आपार्चुनिटी एण्ड कान्टिन्यू टू लर्न। क्योंकि ये कुछ मंत्र हैं जो मैंने मेरी ज़िंदगी में अपनाए हैं, और क्योंकि मैंने ये अपनाए हैं और इस व्हील चेयर पर बैठे हुए भी आज मैं आपके सामने हूं। एक वक्ता, एक मोटीवेटर के रूप में यहां बुलाई गई हूं। लोग तो हमेशा भ्रम में रहते हैं दीपा तो इतना बाहर रहती थी, बच्चे कैसे पालेगी, ये कैसे जीएगी तो मैंने निर्णय लिया कि मुझे उठना होगा और ये पुरानी भ्रांतियां तोड़नी होंगी क्योंकि मेरा शरीर अपंग हुआ था किंतु मेरी आत्मा अपंग नहीं हुई थी।

कदमों को रुकना मंजूर न था,
राहें और भी तो हैं ।
तय तो करना है, तो क्यूँ न हँस कर,
जिंदगी एक सफर ही तो है।।

तो ये आप पर निर्भर है कि अब इस सफर को अंग्रेज़ी वाला Suffer बनाएं या हिंदी वाला सुहाना सफर बनाएं। It is all about you that how you make your choices । यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपनी पसंद - नापसंद कैसे चुनते हैं। जब मैं अस्पताल में थी तो मैं बार-बार रो भी सकती थी क्योंकि मैं जीवन में दोबारा चल नहीं सकती थी, पर मैंने अपने आपको बदला और आज मैं इस सबके बावजूद इस उम्र में भी (थोड़ी ज्यादा उम्र में भी) मैं अच्छी खासी लग रही हूं........ (तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मुस्कुराते हुए) क्यों? मैं उठी और मैंने सोचा उठो गीता उठो और इस शरीर(अपंग) के साथ एक जबरदस्त और स्पष्ट संदेश दो कि There is ability beyong disability and it all about mind over body. I started investing in happy thoughts । मैंने खुश रहना सीखा, खुश रहने में निवेश किया और खुशियां बांटीं........। मैं समझती हूं कि यहां 'निवेश' शब्द का प्रयोग आपके लिए बहुत मायने रखेगा। अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित करना और इस बात का निर्धारण करना कि कैसे उस लक्ष्य को प्राप्त किया जाए। आप अपने उत्पाद के बारे क्या कहना चाहते हैं, और इस बात से लोगों को मनवाना, वास्तव में बहुत बड़ी चुनौती है। दूसरों से अपनी बात मनवाना कोई आसान काम तो होता नहीं! गुरु ही तो बता सकता है कि उसके प्रोडक्ट में क्या गुण है। इसके लिए बात कहने की कला आनी चाहिए........ तो आपकी ड्यूटी है समझाना कि गुरु बिन ज्ञान नहीं। आखिर आप गुरु हैं..... आप एड्वाइजर हैं।

42 साल की उम्र में 58 राष्ट्रीय और 17 अंतर्राष्ट्रीय पदक पाने वाली मैं पहली भारतीय हूं जिसे एक्टिव स्पोर्ट्स के लिए अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया। मेरे पिता, मेरे ससुर जी, मेरे पति और मेरा भाई, ये सभी सेना में हैं। राष्ट्रपति जी तीनों सेना के अध्यक्ष होते हैं। उनके हाथों अर्जुन पुरस्कार लेते समय ये सभी मेरे साथ थे, अपनी वर्दी के कारण नहीं बल्कि मेरे अर्जुन पुरस्कार के कारण। और मजे की बात यह है कि ये जो मैडल मैं आपके लिए लाई हूं, इसमें भी मेरे कोच मेरे पति ही रहे थे। अगर मैंने मोटरसाइकिल चलाई तो लिम्का वर्ड रिकॉर्ड बना, स्विमिंग करी तो यमुना नदी पार करी, गाड़ी चलाई तो हाइएस्ट मोटरेबल रोड्स पे चलाके वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया, एथलीट बनी, हिंदुस्तानन की, पहली महिला जो पैरालंपिक से इंडिया के लिए पहला मैडल लेकर आई है। जब मैं इतनी अपंगता के साथ ये सब कर सकती हूं तो आप क्यों नहीं? कौन रोक रहा है आपको

बड़े सपने देखने से और इन्हें पूरा करने से तो यह आपको निर्णय लेना है कि आप क्या करना चाहते हैं।

जिंदगी तुमने युद्ध बनाकर दी तो क्या
हर बार हथियार डाल दूंगी?

मैं तो वीरांगना हूँ , डटकर - लड़कर
जीत का प्रण कर लूंगी।

जिंदगी तुमने रेत बनाकर दी तो क्या
इसे मुट्ठी मे से फिसलने दूँगी?

मैं अपने आंसुओं से गूंथकर,
गागर बनाकर, खुशियों से भर लूँगी

जिंदगी तुमने लंगड़ी बनाकर दी तो
क्या इसे कुर्सी पर घिसटने दूँगी

मैं तो हिम्मत हूँ अपने दृढ़ निश्चय से
पुनःबिन सहारे के चल लूँगी।

नमस्कार

हार कर भी जीती दीपा कर्माकर

रियो ओलंपिक के वॉल्ट इवेंट में चौथे नंबर पर रहीं दीपा ओलंपिक के फाइनल में पहुँचने वाली पहली भारतीय जिमनास्ट बन गई हैं। हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीपा।

2016 ऑलंपिक की शान रही महिलाएँ

एकल बैडमिंटन में रजत पदक विजेता

पुसरला वेंकट सिंधु रियो ऑलंपिक खेलों में महिला एकल बैडमिंटन स्पर्धा में फाइनल में पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं और रजत पदक जीता। शाबाश.... पी. वी. सिंधु

कुश्ती में कांस्य जीता साक्षी मलिक ने

रियो ऑलंपिक में साक्षी मलिक ने 58 किलाग्राम भार वर्ग में फ्री स्टाइल कुश्ती में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। आपको सलाम साक्षी।

सहायक महाप्रबंधक(राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

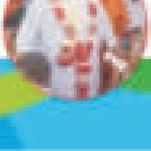

प्रादेशिक भाषा
तमिल

हिंदी रूपांतर

குமரி முதல் இமயம் வரை

கவிஞர்கள் போற்றும் காவிரி கரையிலே
காவியம் பாடி மகிழ்வோம்!
மத்தியில் பாயும் கோதாவரி கரையிலே
மண் வளங்கள் கண்டு வியப்போம்!
புனிதம் நிறைந்த கங்கை நீரிலே
புத்துயிர் பெற்று தளிர்வோம்!

உடுத்தும் உடை வேறு
உண்ணும் உணவு வேறு
உதிர்க்கும் வார்த்தைகள் வேறு - எனினும்
உள்ளத்தால் உண்டு ஒற்றுமையே!

பாரம்பரியம் பகிர்வோம்
பாரின் இயற்கை வளங்கள் காப்போம்
நதிகள் இணைப்போம்
நீர் வழி சாலை அமைப்போம்!

பாரெங்கும் பரவிக்கிடக்கும்
பசி பஞ்சம்
பாரதத்தையும் பதம் பார்க்கிறது!
பரிதவிக்கும் பலருக்கும்
பகிர்ந்தளித்து பரந்தொழிப்போம்
பஞ்சத்தை!

புது சிந்தனைகள் வளர்ப்போம்
குமரி முதல் இமயம் வரை
சகோதரத்துவம் போற்றுவோம்!

பாரில் சிறந்தது இந்த பாரதம்
என்று பெயரெடுப்போம்!!

வ
-வேலவன் பாரதி

वेलावन भारती
आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

कश्मीर से कन्याकुमारी

कवियों द्वारा प्रशंसित कावेरी के पावन तटों पर,
मध्य भाग की गोदावरी के हरित संसाधनों का
आह्लादपूर्ण अनुभव, पतित पावनी गंगा के दर्शन
मात्र से !
नवजीवन का बोध !

है पहनावे अनेक
परंपरा है अनेक
भाषा, बोली है अनेक
किन्तु आत्मा है एक !

परंपरा, संस्कृति विस्तारित हो,
संरक्षित हों अमूल्य संसाधन,
नदियां बने सेतु,!
जोड़ें समस्त भारत को !

संसार के दुष्प्रभावों को,
गरीबी, अकाल, बीमारी को,
संगठित होकर है हटाना,
भारत को है स्वच्छ बनाना!

नई सोच हो विकसित,
बढ़े भाईचारा, हों हम एक
कन्याकुमारी से कश्मीर तक

संसार में सबसे अप्रतिम, अनुपम, अनूठा
हमारा भारत!

पीयूष कुमार
आंचलिक कार्यालय, होशियारपुर

अस्मिता को ढूंढती नारी

अमित नागर

प्रस्तावना

जीवन की गाड़ी दो पहियों वाले वाहन की तरह है, जहाँ स्त्री व पुरुष परस्पर सहयोग व सामंजस्य के माध्यम से उसे आगे बढ़ाते हैं। यहां दोनों पहियों अर्थात् व्यक्तियों का मजबूत व बराबर होना अति आवश्यक है। यदि एक भी पहिया कमजोर व उपेक्षित रहेगा तो जीवन रूपी गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी।

समाज में स्त्री व पुरुष की समानता व अधिकार के बारे में तो अक्सर चर्चा होती है परंतु यथार्थ में स्त्री हमेशा ही अपने अधिकारों से या तो वंचित रहती है या उसे अपने अधिकारों के लिए लड़ाई करनी पड़ती है। पुरुष प्रधान समाज स्त्री को सदा ही अपने से कम आंकता आया है तथा उसे अपने अधीन रखना चाहता है।

परिवेश

नारी की स्थिति सदा ही उपेक्षित नहीं कही जा सकती, हिंदू धर्म में आदिकाल से ही स्त्री को पूजनीय माना गया है, वैदिक काल में नारी की स्थिति सम्मानजनक व आदरणीय थी। तभी तो कहा गया था -

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते।
रमन्ते तत्र देवता''।।

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, उस घर में देवताओं का निवास होता है।

वैदिक काल में ''घोषा'', ''अपाला'', ''लोपा मुद्रा'' व गार्गी आदि महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान इतिहास में दर्ज है।

मध्य काल में महिलाओं की स्थिति में काफी गिरावट आई तथा पुरुष प्रधान समाज का उदय हुआ। महिलाएं उपभोग की वस्तु मानी जाने लगी तथा स्थिति दयनीय होती गई। इसका प्रमुख कारण विदेशी आक्रांताओं का निरन्तर आक्रमण था।

महिलाओं को पिता, भाई व पति के संरक्षण में रखा जाने लगा तथा बाल विवाह जैसी कुरीतियों को बल मिला।

आधुनिक काल (1750-1947) में स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु आंदोलन होने लगे तथा उन्हें समानता का अधिकार दिलाने हेतु निम्न कानून बनाए गए :

1. सती प्रथा निवारण अधिनियम 1829
2. विधवा पुनः विवाह अधिनियम 1856
3. बाल विवाह कानून 1929, शारदा अधिनियम
4. हिंदु संपत्ति अधिकार अधिनियम 1937

इस दिशा में ईश्वर चन्द विद्यासागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, पं. जवाहर लाल नेहरू, राजा राम मोहन राय, आत्माराम पांडुरंग व रवींद्र नाथ टैगोर का योगदान स्मरणीय है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य :

स्वतंत्रता के बाद नारी की स्थिति में सुधार के प्रयास होने लगे परंतु समानता की स्थिति के अपेक्षाकृत परिणाम नहीं आए। नारी अभी भी दयनीय स्थिति से बाहर नहीं निकल पाई। समाज की सोच नारी के प्रति संकीर्ण ही रही तभी तो मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था :

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में दूध और आँखों में पानी।।''

सरकार की ओर से भी नारी की स्थिति को समझते हुए निम्न सुधार किए गए :

1. हिंदु विवाह अधिनियम - 1955
2. दहेज रोधी अधिनियम - 1961 व 1983
3. मातृत्व लाभ अधिनियम - 1961
4. समान वेतन अधिनियम - 1971
5. जघन्य अपराध अधिनियम - 1983 व 2013
6. बाल विवाह अधिनियम - 2006

उपरोक्त अधिनियम के अतिरिक्त भी भारत सरकार व राज्य सरकारें महिला सशक्तीकरण व कल्याण हेतु अनेकों योजनाएं चला रही हैं जो नारी सशक्तीकरण हेतु अच्छा कार्य कर रही हैं। इस दिशा में केंद्र व राज्य स्तर पर महिला आयोग का गठन किया गया है तथा महिला व बाल-कल्याण मंत्रालय मुख्यतया नारी कल्याण हेतु कार्यरत है।

भारत की प्रथम महिला विमान परिचारिका — सुश्री मुक्ति श्रीवास्तव

सकारात्मक पहलु :

यह तो सत्य है कि नारी की स्थिति उपेक्षित रही है। परंतु यह भी सत्य है कि स्थिति में निरंतर सुधार हुआ है। आज महिला देश व समाज के उत्थान व विकास हेतु कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। संसद की स्थिति देखी जाए तो महिलाओं का पूर्ण तो नहीं परंतु सम्मानजनक स्थान व योगदान है। लोकसभा के अध्यक्ष पद पर महिला आसीन है। राजस्थान, बंगाल, तमिलनाडु व गुजरात जैसे राज्यों में महिला मुख्यमंत्री हैं।

राष्ट्रीय व राज्य स्तर की राजनैतिक पार्टियों की प्रमुख महिलाएं हैं। चंदा कोचर, शिखा शर्मा, अरुंधती भट्टाचार्या व उषा अनन्त सुब्रह्मण्यम जैसी विद्वान महिलाएं आई.सी.आई.सी.आई., एक्सिस, एस.बी.आई. व पी.एन.बी जैसे बड़े बैंकों की प्रमुख हैं तथा अपना कार्य बखूबी निभा रही हैं।

महिलाएं आज सेना में भी अपना परचम लहरा रही हैं। संक्षेप में कहा जाए तो ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जो महिलाओं के योगदान से अछूता है। महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपना योगदान दिया है तथा यह साबित किया है कि अवसर मिले तो वह भी पुरुषों के समान ही है।

नकारात्मक पहलु

यद्यपि कानून बना दिए गये हैं तथा अधिकार दे दिये गए हैं परंतु आज भी महिला समाज में पूर्णतया समान स्तर पर नहीं आंकी जाती। इसके निम्न कारण हैं :

1. समाज में शिक्षा की कमी।
2. स्त्री अधिकारों के प्रति जागरूकता का अभाव।
3. बाल विवाह का अभी भी जारी रहना।
4. विधवा पुनः विवाह का समाज में प्रतिरोध।
5. कट्टरवादी गुटों का स्त्री को उपभोग की वस्तु मानना तथा उन्हें अभी भी संरक्षण में रखने की वकालत करना।
6. राजनैतिक चेतना का अभाव।
7. जटिल व रूढ़िवादी परम्पराएं।
8. स्त्री को डायन व कुलटा मानने की प्रथा।
9. स्त्रियों में एकता का अभाव।
10. पुत्र प्राप्ति हेतु पुत्री की गर्भ में हत्या।

उपरोक्त कारणों से समाज में स्त्री की दशा आज भी चिंतनीय है। कानून बना दिए हैं, परंतु कानून को लागू करना व न्याय दिलाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। आज भी यदि कोई महिला पुलिस थाने में एफ.आई.आर. दर्ज कराने जाती है तो यदा-कदा ही एफ.आई.आर. दर्ज की जाती है। 90 प्रतिशत मामलों को या तो दबा दिया जाता है। अथवा महिलाओं पर दबाव बना कर मामला वापिस ले लिया जाता है। बलात्कार, हत्या, दहेज, उत्पीड़न, बाल-विवाह व गर्भ में बेटी का कत्ल जैसी खबरें आज भी अखबार की सुर्खियां बटोरती है।

इस दिशा में शिक्षा व जागरूकता ही महिलाओं में आत्म विश्वास व सशक्तीकरण को बढ़ायेगी। अपने अधिकारों का ज्ञान व उन्हें प्राप्त करने की ललक महिलाओं को समाज में उचित स्थान दिला सकती हैं परंतु यह भी पाया गया है कि अधिकारों के दुरुपयोग से कुछ महिलाओं ने समाज पर नकारात्मक प्रभाव डाला है।

इस दिशा में 498ए कानून जो कि दहेज व घरेलू हिंसा विरोधी अधिनियम है तथा महिलाओं की सुरक्षा व सम्मान हेतु बनाया गया था। 95 प्रतिशत केस जो कि महिलाओं द्वारा दर्ज कराये गये थे। न्यायपालिका के समक्ष झूठे पाए गए हैं। दूसरे पक्ष को परेशान अथवा धमकी व पैसों की चाह में कुछ महिलाएं इसे एक साधन के रूप में उपयोग कर रही है जो कि निंदनीय है। माननीय उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को इसे रोकने हेतु समुचित उपाय करने हेतु निर्देशित किया है।

सारांश :

एक सभ्य व शिक्षित समाज के निर्माण हेतु यह नितांत आवश्यक है कि समाज के प्रत्येक घटक को समुचित सम्मान व स्थान प्राप्त होना चाहिए।

नारी समाज का वह प्रमुख अंग है जो माँ, बहन, बेटी व पत्नी के रूप में सदा पुरुष के साथ, उसके मान , सम्मान व विकास हेतु अग्रसर रहती है।

जिस प्रकार मानव शरीर की स्वस्थता सभी अंगों के समग्र रूप से कार्य करने पर रहती है उसी प्रकार हमारा समाज, देश, सम्प्रदाय, परिवार, धर्म भी तभी स्वस्थ व विकसित होगा जब नारी को पुरुष के समान समझें व उन्हें अधिकार दें।

नारी मानसिक रूप से पुरुष में समकक्ष ही है, हाल ही में यू.पी. एस.सी. में प्रथम रही टीना डाबी ने यह साबित भी कर दिया है कि नारी पुरुषों के किसी रूप में कम नहीं है।

आओ हम आगे बढ़ें तथा महिलाओं को समुचित अधिकार व सम्मान दें ताकि हमारा समाज व विश्व सभी विकास की ओर अग्रसर हो।

- प्रधान कार्यालय जोखिम प्रबंधन विभाग

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते प्रतियोगिताओं के विजेता

राजभाषा शील्ड पुरस्कार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के कर कमलों द्वारा अग्रिम विभाग, लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग तथा सूचना प्रौद्योगिकी विभाग को राजभाषा शील्डें प्रदान की गई। इस अवसर पर आंचलिक कार्यालय, भोपाल को 'क' क्षेत्र, आंचलिक कार्यालय, लुधियाना को 'ख' क्षेत्र तथा आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी को 'ग' क्षेत्र के लिए राजभाषा शील्डों की घोषणा भी की गई।

हिंदी दिवस 14-09-2016 : कुछ झलकियाँ

विमोचन

"राजभाषा अंकुर" पत्रिका का विमोचन करते हुए बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दर बीर सिंह (आई.ए.एस.) उनके साथ है कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश कुमार जैन, कार्यकारी निदेशक श्री अरविंद कुमार जैन, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री एम. जी. श्रीवास्तव तथा महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा।

हिंदी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

हिंदी दिवस समारोह में प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का संचालन करती हुई तथा बैंक अधिकारी को पुरस्कार प्रदान करती हुई डॉ० नीरू पाठक।

श्री राजिंदर सिंह बेदी, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) हिंदी श्रुत लेख प्रतियोगिता आयोजित करते हुए।

प्रतियोगिता में बैंक की महिला कार्मिकों ने भी बढ़-चढ़ कर सहभागिता की।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर

कुलवंत सिंह शेहरी

"हमें घंटी बजाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। एक नौकरानी ने दरवाज़ा खोलकर हमें बैठक में बिठा दिया। घर एकदम साधारण सा बिना किसी आडम्बर के लगा। एक कोने में बड़ा सा टेप रिकॉर्डर पड़ा था। तब वही चलता था। हमारा कलेजा धक्-धक् कर रहा था। थोड़ी देर में सफेद नीले बार्डर वाली साड़ी पहनकर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ गायिका हमारे सामने खड़ी थीं"।

आज हमारे बीच मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, मुकेश, मन्नाडे, महेन्द्र कपूर, हेमंत कुमार, तलत महमूद जैसे सुरीले गायक नहीं हैं। उनके गीत जब भी सुनते हैं तो हमें उनकी याद आती है। परंतु हमारे बीच लता मंगेशकर जैसी कोकिलाकण्ठी मौजूद हैं। हम उन्हें बार-बार सुनते हैं, उनके बारे में पढ़ते हैं तो मन को एक अजीब सा सुकून मिलता है। कल भावी पीढ़ी जब हमसे पूछेगी तो हम बड़े ही गर्व से कह सकेंगे कि हमने उन्हें साक्षात् सुना है...... गाते हुए देखा है। हम बहुत भाग्यशाली हैं कि सुरों की साक्षात् देवी, मधुरता की एक बेमिसाल मूरत, राग रागिनियों की महारानी लता भारतवर्ष का गौरव हैं। विविध भारती में एक बार एक कार्यक्रम में बताया जा रहा था कि लता केवल भारत या पाकिस्तान में ही नहीं, बल्कि विश्व के लगभग 53 देशों में सुनी जाती हैं और विश्व में जहाँ भी भारतीय रहते हैं वहाँ तो रोजाना ही सुनी और सराही जाती हैं।

> हमें घंटी बजाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। एक नौकरानी ने दरवाज़ा खोलकर हमें बैठक में बिठा दिया। घर एकदम साधारण सा बिना किसी आडम्बर के लगा। एक कोने में बड़ा सा स्थूल टेप रिकॉर्डर पड़ा था। तब वही चलता था। हमारा कलेजा धक्-धक् कर रहा था। थोड़ी देर में नीले बार्डर वाली सफेद साड़ी पहनकर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ गायिका हमारे सामने खड़ी थीं।

लता का जन्म 28 सितंबर 1929 को इन्दौर में हुआ था। उनका बाल्य काल अत्यंत दयनीय रहा। पहले उनका परिवार पूना में रहता था। परिवार में तीन बहनें आशा, उषा और मीना तथा एक भाई हृदयनाथ हैं। बचपन से ही लता, पिता के साथ रंगमंच पर अभिनय करती थीं पर उनका मन अभिनय की बजाय गायन पर ज्यादा था। पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर बेहद सुरीले भजन गाया करते थे। लता जब 08 वर्ष की थीं तो पिता जी चल बसे। मासूम लता के कंधों पर परिवार का बोझ आ गया। उनके एक परिचित ने उन्हें फिल्मों में काम करने की सलाह दी। वे पूना से बम्बई चली गईं।

लता बम्बई की लोकल ट्रेन में दिन भर यहाँ-वहाँ काम तलाश करती थीं। परिवार की देखभाल के लिए उन्हें कई समझौते भी करने पड़े। न चाहते हुए भी फिल्मों के काम किया।

वे कुन्दनलाल सहगल से बेहद प्रभावित थीं। फिल्म चंडीदास देखकर छोटी सी लता ने कहा वे सहगल से शादी करेंगी। पिता के निधन के बाद पिता के मित्र बसंत जोगलेकर ने उन्हें फिल्म में काम करने के लिए राजी कर लिया और पहली बार मराठी

फिल्म 'पाहिली मंगलागौर' (1942) में उन्होंने अभिनय किया। बाद में पैसों की खातिर उन्होंने कई फिल्मों में काम किया। 1945 में फिल्म 'बड़ी माँ' में नूरजहाँ के साथ काम किया। उनके साथ में उनकी छोटी बहन आशा ने भी काम किया। इस फिल्म के गीत भी खुद के लिए और आशा के लिए भी उन्होंने ही गाए। पहले गुलाम हैदर और बाद में वसंत जोगलेकर ने लता को पार्श्व गायन के अवसर दिए। फिल्म 'जवूर' में लता के गाए गीत मशहूर तो हुए पर वे स्थापित नहीं हो पाई। 1949 में लता ने फिल्म 'महल' के लिए गीत गाए और 'आएगा आने वाला' गीत से चर्चा में आई। इसके बाद लता ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनका इतना नाम हुआ कि प्रोड्यूसर उनके घर के चक्कर लगाने लगे।

उनका गायन सफर सत्तरवें दशक में चल रहा है। 20 से अधिक भाषाओं में वे अभी तक 30 हज़ार से ज्यादा गीत गा चुकी हैं। उन्होंने 'आनंद गान' बैनर तले फिल्में भी बनाई। वे रिकार्डिंग के समय नंगे पाँव गाती हैं। लता ने पहले उस्ताद अमानत खान, बाद में पंडित तुलसीदास शर्मा और बड़े गुलाम अली खान साहब से शास्त्रीय संगीत सीखा। प्रारंभ में प्रोड्यूसर शषधर मुकर्जी ने लता की आवाज़ को नकार दिया था। क्योंकि लता का उर्दू उच्चारण दोषपूर्ण था पर दिलीप कुमार की सलाह पर उन्होंने शिक्षक शफी जी से उर्दू सीखकर उच्चारण सुधारा। वे दिलीप कुमार को भाई मानती हैं और आज भी राखी बाँधती हैं। मधुबाला, निम्मी, मीनाकुमारी लता जी की अंतरंग दोस्त थी। निम्मी के लिए फिल्म 'उड़न खटोला' के तमिल संस्करण में लता ने पहली बार 1956 में तमिल गीत गाया। नौशाद के लिए लता ने कई कठिन रागों में फिल्मी गीत गाए। 'दीदार' 'बैजू बावरा', 'उड़न खटोला', 'अमर', 'मदर इंडिया' और 'शंकर जयकिशन' के साथ 'बरसात', 'श्री 420', 'चोरी-चोरी' और एस.डी.बर्मन के लिए 'सजाजा', 'हाउस नं. 44', 'देवदास' में जादुई गीत गाए।

1962 में किसी ने इन्हें 'स्लो, पायजन' दिया था। पर तीन महीने के संघर्ष के बाद वे स्वस्थ हो गई। मजरूह सुल्तानपुरी रोज़ लता का खाना पहले खुद चखते थे, फिर लता को खाने देते थे। लता ने अपने कैरियर में 20 से ज्यादा संगीतकारों और 10 से ज्यादा गायकों के साथ गीत गाए हैं। 1994 में लता ने अपना एक कैसेट रिकॉर्ड कराया जिसमें लगभग सभी गायकों के गीत उन्होंने अपनी आवाज में गाए। 'श्रद्धांजली' नामक का कैसेट खूब बिका। इसकी सारी आय चैरिटी में दे दी गई।

छोटी सी भेंट - सौभाग्य से मुझे लता जी से मिलने का एक अवसर मिला। बात लगभग 45 साल पहले की है। मैं दोस्तों के साथ बम्बई (तब यही नाम था) सैर करने गया था। मेरी बड़ी बहन पैडर रोड में रहती थी। बहन ने बताया कि यहाँ से वाकिंग डिस्टैंस पर लता जी की बिल्डिंग 'प्रभुकुंज' है। दीपावली का समय था। बाज़ार में बड़ी रौनक थी। हम दोस्तों की इच्छा हुई कि कोई जुगाड़ करके लता जी से मिला जाए। मुझे याद आया लता जी का जन्म इन्दौर में हुआ था और उनके एक रिश्तेदार के लड़के से मेरा परिचय है। तब मोबाईल फोन का युग नहीं था। कहीं से उस दोस्त नन्दु का नंबर मिला तो उससे प्रार्थना की कि हम लता जी से मिलना चाहते हैं। उसने एक घंटे बाद बता दिया कि कल सुबह ठीक 9.00 बजे प्रभुकुंज चले जाना दादा हृदय नाथ मंगेशकर मिलवा देंगे। हम इतने खुश थे कि सारी रात सो नहीं पाए। रूपरेखा बनाते रहे कि कैसी होंगी..... उनसे क्या बात करेंगे.. ..... कौन कौन से सवाल पूछेंगे...... । कैसा लगेगा... आदि-आदि।

अगले दिन धनतेरस थी और मंगेशकर परिवार घर में महापूजा करता था। हम 10 मिनिट पहले ही पहुँच गए। गार्ड ने रोका तो बताया कि मुलाकात की अनुमति है। जल्दी-जल्दी में घर से कैमरा साथ लाना भूल गए थे। उसने इन्टरकॉम पर पूछकर हमें जाने दिया। पहले माले पर दो फ्लैट थे। एक पर लता मंगेशकर की नेम प्लेट तो सामने वाले पर आशा भोंसले की नेम प्लेट लगी थी। हमें घंटी बजाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। एक नौकरानी ने दरवाज़ा खोलकर हमें बैठक में बिठा दिया। घर एकदम साधारण सा बिना किसी आडम्बर के लगा। एक कोने में बड़ा

वह भारतीय महिला जो सबसे कम उम्र (19 वर्ष) में एवरेस्ट पर चढ़ने में सफलता पाई – **डिकी डोल्मा**

सा स्पूल टेप रिकॉर्डर पड़ा था। तब वही चलता था। हमारा कलेजा धक्-धक् कर रहा था। थोड़ी देर में नीले बार्डर वाली सफेद साड़ी पहनकर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ गायिका हमारे सामने खड़ी थी। उन्हें देखकर मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए। मैंने चरण छूने चाहे तो वे थोड़ा पीछे हटी। मेरे कानों ने वो आवाज़ सुनी जो विश्व की दुर्लभ आवाज थी। उन्होंने कहा 'बस-बस इसकी क्या ज़रूरत है' पर हमने एक स्वर में कहा दीदी हम आपके चरण श्री स्पर्श कर स्वयं को धन्य करना चाहते हैं। उन्होंने न केवल आशीर्वाद दिया बल्कि पूजा का प्रसाद भी दिया। वे बोलीं हृदय ने बताया आप इन्दौर से आए हैं। इन्दौर अब कैसा है मैं तो जा नहीं पाती। सब लोग नाराज़ हैं। अब ज़रूर आऊँगी। मैंने कहा नंदू जी के विवाह पर ज़रूर आइएगा। हम लोग लगभग आधा घंटा वहाँ रहे। इसी बीच हृदयनाथ दादा और उषा मंगेशकर भी ये देखने आईं कि लता दीदी के शहर इन्दौर से कौन आया है। लता जी का जन्म इन्दौर के सिख मोहल्ले में हुआ था। आधे घंटे के दौरान हम बस उन्हें सुनते रहे, महसूस करने की कोशिश करते रहे कि हमारे सामने विश्व की एक महानतम, कालजयी, साक्षात् सरस्वती सी कोकिला कण्ठी बैठी है। ये छोटी सी भेंट हमेशा याद रहेगी। फोटो नहीं ले पाए, इसका आज तक दुःख है।

लता जी ने हर रंग के, हर मिज़ाज के, हर सिचुएशन के गीत गाए हैं। विरह गीत हो या मिलन गीत, लता के लिए सारे चुटकी की बात थी। 'शर्मीली' फिल्म का 'मेघा छाए आधी रात' - या 'अमर प्रेम' फिल्म का रैना बीती जाए, श्याम न आए...' लता के प्रिय गीतों में से हैं। उनके पसंदीदा विरह गीतों में 'प्रेम पुजारी' फिल्म का 'रंगीला रे, तेरे रंग में यूं रंगा है मेरा मन...' भी है। कुछ गीत लता मंगेशकर नहीं गाना चाहती थीं परंतु संगीतकार या निर्माता के दबाव में गाने पड़े। 'संगम' फिल्म में उन्हें 'मैं का करूँ राम मुझे बुड्ढा मिल गया...' राजकपूर के दबाव में गाना पड़ा। उन्होंने लाख कहा कि ये गीत आशा भोंसले के टेम्पो का है। पर राजकपूर लता से गवाना चाहते थे। उन्होंने गाया। ऐसे ही ताराचन्द बड़जात्या की फिल्म 'हम आपके हैं कौन' का 'माए नी माए मुंडेर पे तेरी बोल रहा है कागा...' भी मजबूरी में गाना पड़ा। अक्सर कैबरे गीत आशा भोंसले गाती थीं परन्तु एक बार जब आशा बीमार थीं लता को 'आ...जाने... जा... तेरा ये हुस्न जवाँ...' (इंतकाम) जैसा गीत भी गाना पड़ा।

ऐसे ही कुछ गीत लता को बेहद पसंद हैं, पर ये गीत उन्हें गाने का मौका नहीं मिला। 'वक्त' फिल्म में 'आगे भी जाने न तू....' गीत आशा से गवाया। लता ये गीत गाना चाहती थीं। ऐसे ही स्व. मुबारक बेगम का 'मुझको अपने गले लगा लो....' या 'कभी तन्हाइयों में यूं हमारी याद आएगी' गीत लता गाना चाहती थीं। फिल्म 'बात एक रात की' में हेमन्त कुमार के साथ सुमन कल्याणपुर ने एक युगल गीत गाया था। 'न तुम हमें जानो ....' ये गीत भी लता गाना चाहती थीं। ये गीत उन्होंने कई बार लाईव कार्यक्रमों में अन्य गायकों के साथ गाए। यही नहीं कई ऐसे गीत जो पुरुष गायकों ने गाए, लता गाना चाहती थीं। किशोर कुमार का 'कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन...' या मोहम्मद रफी का 'मन रे तू काहे न धीर धरे....' ऐसे गीत हैं जो लता ने कई बार मंच से ये कहकर सुनाए कि काश ये गीत उनसे गवाए गए होते। हेमंत कुमार लता को बेहद पसंद थे। उनका एक गीत 'जाने वो कैसे लोग थे जिनको प्यार से प्यार मिला...' लता जी ने कई बार मंच से गाया है। हेमंत दा के साथ उनके युगल गीत भी बेहद लोकप्रिय हैं।

लता का मिले एवार्ड्स/सम्मान

लता मंगेशकर को अनेकों एवार्ड्स और सम्मान मिले हैं।

- भारत सरकार द्वारा भारत रत्न, पद्‌मश्री, पद्‌म भूषण, पद्‌म विभूषण
- तीन बार सर्वश्रेष्ठ गायिका का राष्ट्रीय पुरस्कार(1972, 1975 और 1990)
- महाराष्ट्र सरकार पुरस्कार (1966, 1967)

- सबसे अधिक गीत गाने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड 1974
- दादा साहेब फाल्के एवार्ड 1989
- 6 बार फिल्म फेयर और 1993 में फिल्म फेयर लाईफ टाईम अचीवमेंट एवार्ड
- जी सिने, आईआईएएफ, स्टारडस्ट का लाईफ टाईम एवार्ड
- नूरजहाँ एवार्ड 2001
- महाराष्ट्र भूषण 2001
- मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष लता मंगेशकर पुरस्कार दिया जाता है। किसी जीवित व्यक्ति के नाम यह पहला पुरस्कार है। यह 1984 से शुरू किया गया।

जब लता ने फिल्म फेयर अवार्ड को मना किया :- फिल्म जगत में सबसे अहम एवार्ड 'फिल्मफेयर' माना जाता है। कई बड़े कलाकार पैसे देकर ये एवार्ड खरीदते हैं। पर जब लता को 6 एवार्ड मिल गए तो उन्होंने पत्र लिखकर भविष्य में उनको ये एवार्ड नहीं देने का अनुरोध किया, ताकि नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहन का अवसर मिले।

लता जी के टॉप 25 - रेडियो सिलोन पर एक बार उद्घोषक अमीन सयानी ने लता जी से पूछा था कि आपको अपने गाए कौन-कौन से गीत ज्यादा पसंद हैं। लता जी ने बताया कि माँ को सारे बच्चे प्यारे होते हैं। मुझे हर गीत पसंद है। कुछ ज्यादा तो कुछ कम। तब अमीन सयानी ने जो 25 गीत पूछे वो बाद में फिल्म फेयर पत्रिका में छपे। मेरी याद के अनुसार वे 25 गीत इस प्रकार हैं।

1 ऐ मेरे वतन के लोगो ... (गैर फिल्मी)
2 आएगा... आने वाला आएगा..... (महल)
3 अजीब दास्ताँ हैं ये..... (दिल अपना और प्रीत पराई)
4 मेघा छाए आधी रात ....(शर्मीली)
5 काँटों से खींच के ये आँचल (गाइड)
6 दिल अपना और प्रीत पराई..... (दिल अपना और प्रीत पराई)
7 रैना बीती जाए.... (अमर प्रेम)
8 चंदा है तू मेरा सूरज.... (आराधना)
9 ओ बसंती पवन..... (जिस देश में गंगा बहती है)
10 आ जा रे परदेसी..... (मधुमति)
11 ज्योति कलश छलके... (भाभी की चूड़ियाँ)
12 ऐ मालिक तेरे बंदे हम..... (दो आँखें बारह हाथ)
13 अजी रूठकर अब कहाँ.... (आरज़ू)
14 आ जा आई बहार दिल है बेकरार (राजकुमार)
15 बिंदिया चमकेगी.....। (दो रास्ते)
16 रंगीला रे..... (प्रेम पुजारी)
17 भैया मेरे राखी के बंधन निभाना ......(छोटी बहन)
18 ओ सजना बरखा बहार..... (परख)
19 घर आया मेरा परदेसी...... (आवारा)
20 तेरा जाना दिल के अरमानों.... (अनाड़ी)
21 कहीं दीप जले कहीं दिल.... (बीस साल बाद)
22 यूं हसरतों के दाग.... (अदालत)
23 उनको ये शिकायत है कि हम..... (अदालत)
24 जब प्यार किया तो डरना क्या ..... (मुगल ए आज़म)
25 अल्लाह तेरो नाम..... (हम दोनों)

लता मंगेशकर एक गायिका ही नहीं एक किवदन्ती है, विश्व धरोहर है, एक सुरीला विश्वास है, एक अमर गाथा है, एक कभी न भूलने वाली याद है, एक हमेशा-हमेशा हृदय में बसी रहने वाली शख्शियत है। उनकी आवाज में माँ की ममता, बहन का स्नेह, पत्नी की गर्माइश, देश प्रेमी की देशभक्ति, एक आराधक की भक्तिमय विनय और एक भावुक राही का आत्मविश्वास तो है ही साथ में चाँदनी सी मिठास, सावन की घटाओं का उन्माद, गंगा की लहरों की चंचलता, सागर की गहराई का गांभीर्य और बहारों की खनक भरी महक भी है। वे अमर रहें। सदैव वाणी का जादू, आवाज़ की मिठास और भावनाओं का स्नेह यूँ ही बिखेरती रहें। सदा स्वस्थ रहें। हम सदा उन्हें यूँ ही सुनते रहें। उन्हें ढेर सारी शुभकामनाएं।

- पूर्व राजभाषा प्रबंधक

ज़रा सोचिए......?

डॉ नीरू पाठक

मैं रोज़ ही घर से बैंक तक का सफर मेट्रो में महिलाओं के डिब्बे से करती हूं। कभी सीट मिली, कभी नहीं भी मिली। उस दिन महिला दिवस था महिलाओं की स्थिति पर अलग-अलग वक्तव्य समाचार-पत्र, टीवी, रेडियो पर निरंतर आ रहे थे। आज की महिला पूर्व की तुलना में ज्यादा सक्षम एवं सबल हो गई है, यही सोचती हुई मैं भी घर से बैंक की ओर चल पड़ी। कुछ देर भी हो गई थी। तेजी से चलने से घुटने में दर्द भी बढ़ गया था। लिफ्ट से जैसे ही प्लेटफार्म पर पहुँची तो मेट्रो आ गई। महिलाओं के डिब्बे तक जाने की बजाए मैं लिफ्ट के सामने वाले कोच में ही चढ़ गई। मेरे ऑफिस के पास कालिंदी कॉलेज है इसलिए कॉलेज की लड़कियाँ ही डिब्बे में ज्यादा थीं। मैंने देखा कि वरिष्ठ नागरिकों की सीट पर कॉलेज की लड़कियाँ बैठी हैं और महिलाओं की सीट पर एक युवा महिला तथा एक बुजुर्ग बैठे थे। बुजुर्ग की आँखों पर काला चश्मा था। मैं समझ गयी कि शायद आँखों में परेशानी है। वो मुझे देख कर उठने लगे। मेरे घुटने में दर्द भी हो रहा था किंतु मैंने उन्हें उठने से मना कर दिया। मुझे लगा इन्हें मुझसे ज्यादा जरूरत है सीट की। बीस मिनट का सफर जैसे-तैसे पूरा हो ही जाएगा। किंतु उनके साथ बैठी युवती जिसके हाथ में महंगा सा मोबाइल था और वह निरंतर कोई गेम खेलने में व्यस्त थी, मुझे उसकी मानसिकता को देखकर दुख हो रहा था। उसने आँख ऊपर उठाकर भी नहीं देखा। मेट्रो निरंतर अपनी तेज स्पीड से चली जा रही थी। खड़े होने से घुटने का दर्द बढ़ता जा रहा था, पर मेरा तकरीबन आधा सफर पूरा हो चुका था, कुछ ही देर की बात थी, यही सोचकर मन को तसल्ली दी। तभी मेट्रो स्टेशन पर रुकी और डिब्बे में कुछ भीड़ बढ़ गई। एक 20-22 वर्ष की लड़की जिसने ऊँची एड़ी की सैंडिल पहनी थी, कानों में हेडफोन, कंधे पर लंबा सा बैग, शायद कुछ किताबें होंगी उसमें, धड़धड़ाती हुई डिब्बे में अंदर आई और फौरन उस बुजुर्ग से बोली लेडिज सीट है, उठिए। मैंने हतप्रभ उस लड़की की ओर देखा। बुजुर्ग धीरे से उठने लगे, तभी मेट्रो में ब्रेक लगी, और वे अपने को संभाल नहीं पाए। अब मुझसे रहा नहीं गया। मैंने थोड़ी ऊँची आवाज में कहा कि यह ठीक नहीं। शायद तुम्हें सही शिक्षा नहीं मिली है। ज़रा सोचो, यदि इनकी जगह तुम्हारे पिता होते तो क्या तुम ऐसा ही व्यवहार करती? आप भी ज़रा सोचिए ..... ?

प्र. का. राजभाषा विभाग

बेटी...

घर की सब चहल-पहल है बेटी,
जीवन में खिला कमल है बेटी।
कभी धूप गुनगुनी सुहानी,
कभी चंदा शीतल है बेटी।।
शिक्षा, गुण संस्कार रोप दो,
फिर बेटी सी सबल है बेटी।।
सहारा दो भर विश्वास का,
तो पावन गंगाजल है बेटी।।
प्रकृति के सद्गुण सींचो,
तो प्रकृति सी निश्छल है बेटी।।
क्यों डरते हो पैदा करने से,
अरे आने वाला कल है बेटी।।

कार्टून कोना

आंचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आँचलिक कार्यालयों में हिंदी दिवस एवं

आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आँचलिक कार्यालय, पटियाला

आँचलिक कार्यालय, बठिण्डा

आँचलिक कार्यालय, गुड़गाँव

आँचलिक कार्यालय, बरेली

सी बी आर टी, चंडीगढ़

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

आँचलिक कार्यालय, पटियाला

आँचलिक कार्यालय I, नई दिल्ली

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

औंचलिक कार्यालय, अमृतसर

औंचलिक कार्यालय, लुधियाना

सी.बी.आर.टी., चंडीगढ़

औंचलिक कार्यालय, अमृतसर

गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम

प्रधान कार्यालय के संयोजन में दिनांक 7.9.2016 को सीबीआरटी चंडीगढ़ में 'ग्राहक सेवा में हिंदी एवं प्रादेशिक भाषाओं के महत्व' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन चंडीगढ़ अंचल के आंचलिक प्रबंधक श्री जी. एस. सरना द्वारा किया गया। संगोष्ठी में प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेदली ने सभी सहभागियों का मुख्य वक्ता के रूप में मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में देशभर से कुल 34 स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन सीबीआरटी की मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती इंदरपाल कौर द्वारा किया गया।

काव्य मंजूषा

बेटी है, तो है सृष्टि सारी

विशाखा शर्मा

कभी बेटी, कभी बहन,
कभी पत्नी तो कभी माँ है नारी,
पुरुष जिसके बिना असहाय है, ऐसी है नारी।
कभी ममता की फुलवारी,
तो कभी राखी की क्यारी है नारी,
सृष्टि जिसके बिना थम जाए, ऐसी है नारी।।
पुरुषों की पूरी भीड़ पर अकेली भारी है नारी,
जो सृष्टि को जलाकर राख कर दे,
ऐसी चिंगारी है नारी।
बेटी हो तो...... पिता की राजदुलारी है नारी,
माँ हो तो...... संतान के लिए हमेशा कुर्बान है नारी,
बहन हो तो...... भाई की लाड़ली है नारी,
पत्नी हो तो...... पति की जान है नारी,
पुरुष हमेशा अधूरा तो..... हमेशा पूरी है नारी
सृष्टि जिस पर घूम रही, वह धुरी है नारी,
जब गर्भ में नहीं मारोगे, तभी तो तुम्हारी है नारी,
जब नारी है ..... तभी तो है ये सृष्टि सारी।।

- अधिकारी
आंचलिक कार्यालय, बरेली

कुछ धुँधली-धुँधली सी ज़िंदगी

भारती

कुछ धुँधली-धुँधली सी ज़िंदगी
बस यूँ ही जिए जा रहे हैं
एक किरदार बन गए हैं...... बस
जिसकी भूमिका निभाए जा रहे हैं
भूमिका बेटी की, भूमिका बहन की,
भूमिका पत्नी की, और सबसे अहम्
भूमिका..... 'माँ' की
सबसे मुख्य किरदार निभाया
पर पुरस्कार में मात खा गई
हर किरदार को दिल से निभाया
पर.... पर पहचान न बना पाई
अब तक इन्हीं किरदारों के बीच
फँसी रही, घुटती रही, कुढ़ती रही
पर उफ्फ न की
लगा कि इन्हीं किरदारों के लिए जन्मी
आज जाना सब मिथ्या थी
मिथ्या थे मेरे किरदार
रचे गए थे जानकर
पर..... पर आज छँटे हैं मिथ्या बादल
छाइ फिर उजियाली है
रोशनी है चहुँ ओर
चमक-चमक सी छायी है
लेटी हूँ शय्या पर जब
जीवन की सच्चाई जानी है
मिथ्या अब कुछ रही नहीं
मृत्यु जो अब आई है।

राजभाषा अधिकारी
प्र.का. मुद्रण एवं स्टेशनी विभाग
नई दिल्ली

प्रथम भारतीय महिला जिसने उल्लेखनीय नागरिक सेवा के लिए रैमन मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त किया – **श्रीमती किरण बेदी**

स्वावलंबन और नारी विकास

चीख

रीटा भट्टाचार्य

फट-फट... छट-छट.....। 'सक्सेना-निवास' में माता उमा सूप में गेहूं उछाल रही थी, रसोईघर में बड़ी बेटी माधवी अंगीठी में रोज़ की तरह आज भी झुलसती रही..... "निगोड़ी सब्जी जल गई...... वह बड़बड़ाने लगी। छोटी बेटी अतिमा और बेटा विशाल ज़िंदगी को सुलझाने में व्यस्त थे। बरामदे में पिता उमेश के हाथों में अखबार फड़फड़ा रहा था। लगभग यही रोज़ का सा क्रम।

- "माँ .... एकटू भिजये दाओ ना.....। भोगोबान तोमार मंगल कोरबेन.......।"

"अतिमा बेटी। इसे कुछ दे दे। अखबार की फड़फड़ाहट के बीच से पिता उमेश की खीझ भरी आवाज उभरी थी। ...... आवाज़ खीझ भरी..... आक्रोश भरी.........।

उमा और उमेश इस सक्सेना दम्पत्ति की गृहस्थी कोई बहुत बड़ी नहीं थी - दो बेटियाँ और एक बेटा। पर एक घुन सा लग गया था जैसे.....। पहले उमेश में स्फूर्ति थी विश्वास था कि वह भी अपना सुखी संसार बसाएगा। बच्चों को ऊँची तालीम देंगे और बेटियों का अच्छे घरों में ब्याह करेंगे। उमेश प्रतिदिन दफ्तर जाते और महीने के अंत में अपनी लगन से कमाई रकम लाकर उमा के हाथों में थमा देते। ऊँची तालीम और सुखी संसार के सपने बलिदान भी माँगते हैं - यही तो उमेश ओवरटाइम में पिसने लगे। समय जैसे घड़ी की सुई से भी तेज़ भागने लगा और उमा के दोनों बेटियों की बढ़ रही उम्र का घुन खाने लगा।

दफ्तर से लौटे उमेश को परोसी थाली के सामने बैठते ही क्लेश शुरू हो जाता।

उमा बोलती - "तुम ही बताओ, सारा पैसा तो बच्चों की पढ़ाई और घर के खर्चों में खप जाता है और लड़कियाँ हैं कि बाँस की तरह लंबी होती जा रही हैं।" माता उमा की आवाज में दर्द होता।

देश के किसी राज्य की प्रथम महिला मुख्यमंत्री – **सुचेता कृपलानी** (उत्तर प्रदेश, 1963)

उमेश चिपक पड़ते - "तो तुम क्या चाहती हो कि मैं......! ओह! मुझसे जितना होता है मैं करता हूँ। ओवरटाइम भी करता हूँ।... .... अब और क्या करूँ......?

उमा फिर भी पीछे न हटती। भला हटती भी कैसे। पड़ोसिनों के व्यंग्य तो उसे ही सुनने पड़ते हैं। उमेश तो दिन भर दफ्तर रहते हैं। उमा फिर बरसती - "बेटियों की शादी तो करनी ही पड़ेगी। उन्हें घर में बैठाकर तो नहीं रख सकते।" कभी-कभी ताने व्यंग्य में बदल जाते - यह सब शादी से पहले सोचना था। बच्चों के प्रति जिम्मेदारियों को तो पूरा करना ही पड़ता है, चाहे जैसे भी हो.......। और ....उमेश परोसी थाली छोड़ कर उठ जाते। सिगरेट फूँकते बरामदे में इधर से उधर टहलने लगते थे।

उमेश की अन छुई परोसी थाल विशाल के सामने रखने पर उसे यही बताया जाता कि आज बापू की तबीयत ठीक नहीं है सो खाने की तबीयत नहीं है। या..... वे किसी मित्र के यहाँ से खा कर ही लौटे हैं। पर आखिर विशाल दूध पीता बच्चा तो था नहीं। उसे भी असलियत का पता चल ही जाता।

"पर अम्मा! जानती हो बापू गैर जिम्मेदार हैं, अन्यथा लड़का मिलेगा क्यों नहीं! कभी ढूंढा भी है।" माँ! ऐसे भी घर हैं जहाँ गुण की पूजा है धन की नहीं।"

उमा मानने लगी थी, शायद विशाल ही उसका बोझ हल्का करने में कुछ मदद कर सके।

विशाल के जाने किन-किन घरों में चक्कर लगने लगे थे। कभी कोई फोटो लाकर माँ की हथेली पर रख देता कभी कोई। कम दहेज लेने का आश्वासन हर कहीं से लाता पर लड़के के बारे में बताई गई डिग्री या निजी व्यवसाय की सारी बातें जालसाजी साबित होती। बेटा विशाल अब कुछ ट्यूशन्स भी करने लगा था। बेटी अतिमा ने किसी प्राइवेट फर्म में क्लर्क की नौकरी कर ली। अम्मा-बापू को उसने अपनी कुछ सहेलियों के हवाले देकर राजी कर लिया कि वह काम के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी करती रहेगी। और इस तरह जीजी माधवी का दहेज जुटाने में कठिनाई नहीं होगी।

परंतु ......उमेश दिन पर दिन स्वयं को दोषी महसूस करने लगे थे। हालांकि कर कुछ भी नहीं सकते थे। माँ उमा उम्र के ढलते पड़ाव की तरफ बढ़ रही थी और पिता उमेश का चिन्ता से जर्जर हो गया शरीर विटामिन्स के ज़ोर पर ही टिका था। अब तो अतिमा और विशाल को बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता भी सताने लगी थी। अब पिता उमेश का ओवरटाइम चल नहीं चल पा रहा था।

महीनों पर महीने बीतने लगे। उमेश के स्वास्थ्य के साथ-साथ घर की हालत में भी सुधार के लक्षण कहीं नहीं दिखाई दे रहे थे। अम्मा-बापू की निराशा को फिर भी विशाल दिलासा देता। ट्यूशन्स के बाद का, सारा समय अब वह अखबारों और पत्रिकाओं में वैवाहिक के कॉलम्स पढ़ कर, खत भेजने उनके उत्तरों की प्रतीक्षा में और द्वार-द्वार जा कर दीदी के लिए वर तलाशने में लगाता जहाँ दहेज की माँग न होती, दुगने उत्साह के साथ खोज-खबर लेता पर अंत में वही......।

विशाल को अब समझ आया कि वह जो सोचता था 'बापू गैरजिम्मेदार हैं' वह उसकी कितनी बड़ी भूल थी। असल में बापू अनुभवी हैं। वे जानते थे कि अच्छा घर और अच्छा वर बढ़िया दहेज भी माँगता है और दहेज न जुटा पाने वाले पिता की कन्या

आजीवन कुँवारी ही रह जाती है। फिर भी उसने आशा नहीं छोड़ी और वह अच्छे घरों में अपनी दीदी की फोटो और चिट्ठियाँ ले जा कर दिखाता वैसे ही जैसे नौकरी की तलाश में कोई प्रत्याशी। लेकिन दहेज की समस्या हर घर से उसे 'नो चान्स' कह देती।

अतिमा से और नहीं सहा गया। उसे नारी के रूप में अपना अस्तित्व ही अभिशप्त लगने लगा। भीतर ही भीतर घुटती बड़ी बेटी माधवी भी छोटे भाई के सामने फट पड़ी - ''हमें नहीं जरूरत ऐसे घर में ब्याहने की जहाँ दहेज की माँग हो। जिसे अर्धांगिनी चाहिए वह हमारा हाथ माँगे और जिसे दहेज की कामना हो, कह दो उनसे जाकर कि धन-दौलत से ही सात फेरे ले लें। यदि दहेज ही असल है तो कन्या की क्या जरूरत है।

विशाल ने मन ही मन संकल्प लिया कि वह जहाँ शादी करेगा, दहेज को हाथ भी नहीं लगाएगा। उसे लगा केवल उसी की बहनें बल्कि हर कुँवारी कन्या चीख-चीख कर कह रही हैं - ''तुम लोगों ने ही नारी की महत्ता को दबाया है, उसका जीवन अभिशप्त तुम्हीं ने बनाया है। नारी को माँ-बाप, भाईयों और समाज पर बोझ बनाने वाले निःसंदेह तुम्हीं पुरुष वर्ग हो।

''तुम पुरुषों ने ही दहेज रूपी राक्षस का सृजन किया है जो उन सभी घरों-परिवारों के माता-पिता, उनके सुख-चैन और शान्ति को खा जाता है जिसमें बेटी जन्म लेती है।''

माधवी और अतिमा ने निश्चय किया कि नौकरी करके, ओवर टाईम या ट्यूशन्स करके जैसे भी हो वे घर की हालत में सुधार लाएँगी और उच्च शिक्षा लेंगी। विशाल को भी नारी-मुक्ति का सही अच्छा उपाय दिखाई दिया कि उन्हें उच्च शिक्षा दी जाए, आत्मनिर्भर बनाया जाए तभी सामाजिक कुरीतियाँ और रूढ़ियाँ टूटेंगी। साथ ही समानता के स्तर पर एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।

बड़ी बेटी माधवी के घर की चार दीवारी से बाहर आ कर यह सिद्ध कर दिया कि वह नारी के रूप में समाज और अपने माता-पिता पर बोझ नहीं है और वह उनके लिए बेटे से कम नहीं है। नारी निश्चय ही पुरुषों की बराबरी कर सकती है।

अतिमा ने भैया विशाल को समझा दिया कि वह बहनों की चिन्ता छोड़कर अपनी पढ़ाई की तरफ ध्यान दे और पढ़-लिखकर अच्छा विवेकशील इंसान बने।

सक्सेना दम्पति के आश्चर्य का उस समय ठिकाना न रहा जब उनके घर पर मिस्टर माथुर स्वयं आ कर उनकी बेटी माधवी का हाथ अपने इंजीनियर बेटे के लिए माँग रहे थे। बापू उमेश ने अपनी वही समस्या दोहरा दी - ''हम इतना अधिक दहेज नहीं दे सकेंगे, हमने आपको पहले भी बताया था तब तो आपने चुपी साध ली थी। हम तो हैरान हैं कि आप फिर उसी प्रस्ताव को लेकर आए हैं।''

माधवी, अतिमा और विशाल अंदर बैठे चुपके-चुपके उन लोगों की बातें सुन रहे थे। मिस्टर माथुर कह रहे थे - ''बात यह है मिस्टर सक्सेना कि अब तो आपकी बेटी काफी पढ़-लिख गई है और नौकरी भी करने लगी है। वास्तव में मेरा बेटा ऐसी ही लड़की से विवाह करना चाहता है। दहेज की हमारी कोई माँग नहीं है। आप केवल 'हाँ' कह दें बस। मैं लौट कर बेटे को यह खुशखबरी सुनाने को लालायित हूँ। फिर थोड़ा रूक के बोले - ''बेटा कह रहा था उसका एक डॉक्टर मित्र आप की छोटी कन्या से विवाह करना चाहता है और उसकी माताजी अपने बेटे के लिए आपकी बेटी का हाथ माँगने एक दो दिन में आपके यहाँ आएँगी, आपकी अनुमति हो तब। उनकी भी दहेज की कोई माँग नहीं है। वे केवल सुशील और पढ़ी-लिखी कन्या चाहते हैं।

माधवी और अतिमा को इतने योग्य वर मिलेंगे यह सक्सेना दम्पति ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। आज जब शारदा माँ की कृपा से यह सुख उनकी बेटियों को मिलने वाला था। तब भला उन्हें क्या एतराज हो सकता था। वे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। विशाल भी खुशी-खुशी बहनों की शादी की तैयारियों में जुट गया।

जब शहनाई की मधुर ध्वनि कानों में रस घोलने लगी तब भी माधवी और अतिमा को दुःख था तो केवल यही कि उनसे बाबुल का आँगना अब जल्दी ही छूटने वाला था।

पूर्व मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया

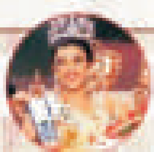

एक लड़की : असुरक्षित सी

श्रद्धा अवस्थी

रात के लगभग 9.30 बज रहे थे। डरी सहमी सी प्रिया घर पहुंची। मन ही मन में सोचते हुए... आज तो बहुत देर हो गई माँ का गुस्सा तो आज सातवें आसमान पर होगा, आज तो खैर नहीं ....उसने घंटी बजाई और माँ ने तो सचमुच दरवाजा खोलते ही सवालों की बौछार कर दी "इतनी देर कैसे हो गई.... कहाँ रह गई थी.... कहा था जल्दी आ जाना.... कुछ ऊंच-नीच हो जाए तो और ना जाने क्या-क्या"।

माँ की डांट सुनते-सुनते और उनको बताते-बताते की क्यूं देर हुई, प्रिया अपने कमरे में चली गई। हजारों सवाल उसके जहन में फिर से उठने लगे..." क्यूं होता है ऐसा हर बार उसके कहीं आने-जाने पर, क्यूं ज़रा सी देर हो जाने पर माँ-बाप इतने परेशान हो जाते हैं। भाई के साथ तो ऐसा नहीं है। फिर उसके साथ क्यूं, उसे उतनी ही आज़ादी क्यूं नहीं। और भी जाने कितने ही सवालों के भंवर में डूबी प्रिया जाने कब सो गई।

ये जद्दो-जहद किसी एक प्रिया की नहीं है। ना उसके माता-पिता ऐसे अकेले माता-पिता है जिन्हें अपनी बेटियों को लेकर हमेशा डर, चिंता बनी रहती है।

सवाल यह उठता है कि आज के इस आधुनिक युग में जहां हम महिला पुरुष समानता की बात करते हैं और जहां वास्तव में महिलाएं हर क्षेत्र में बराबरी से सहयोग करने में सक्षम हैं, वहाँ ऐसी असुरक्षा की भावना क्यूं?

आज हर तरफ महिला सशक्तिकरण की बात होती है। महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार की स्थितियों को बेहतर बनाने की बात हो रही है। आज हमारे देश की सरकार भी महिलाओं की समाज में सक्रिय सहभागिता और सशक्तता को मजबूत बनाने के लिए नित नए कदम उठा रही है एवं महिला सशक्तिकरण की एक मुहिम चला रही है। ये सच है कि सामाजिक और आर्थिक स्तर पर परिस्थितियाँ एक हद तक बेहतर हुई हैं और महिलाओं की स्थिति में सुधार भी। किंतु ये सिक्के का सिर्फ एक पहलू है। दूसरा पहलू भी देखना जरूरी है जो अमूमन हर रोज़ न्यूज़ चैनल पर देखते हैं। महिलाओं के साथ हो रही अपराध और हिंसा की खबरें शायद ही किसी दिन हमें ना झकझोरती हों कि किस तरह के समाज में हम वास्तव में जी रहे हैं। चौंकाने वाली बात तो यह है कि इनमें आए दिन बढ़ोतरी हो रही है। फिर चाहे वो बुलंदशहर जैसी साधारण जगह हो या राजधानी दिल्ली, सच्चाई यही है कि हम महिलाएं कहीं भी अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करती हैं। हम कितनी ही डींगें हांक लें, सोशल नेटवर्किंग साइट पर पोस्ट शेयर और लाइक कर लें पर हकीकत यही है।

सवाल यह उठता है कि आज के इस आधुनिक युग में जहां हम महिला पुरुष समानता की बात करते हैं और जहां वास्तव में महिलाएं हर क्षेत्र में बराबरी से सहयोग करने में सक्षम हैं, ऐसी असुरक्षा की भावना क्यूं?

ज़ाहिर है एक स्वाभाविक सा सवाल सभी के मन में उठता है कि क्यूं आज भी हम एक बेहतर समाज बनाने में असफल हैं जबकि हम अपने देश को दुनिया में सुपर पावर बनते देखना चाहते हैं। पर यह तब तक संभव नहीं है जब तक यह परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगी।

आवश्यकता सिर्फ बेहतर कानून व्यवस्था और सरकारी प्रयासों की नहीं है क्योंकि इस तरह तो स्थिति संतोषजनक है। आवश्यकता एक बुनियादी बदलाव की है। बदलाव उस विकृत मानसिकता में है जो आज भी महिलाओं को एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार नहीं करती। बदलाव उस सामाजिक परंपरा में भी, जहां बेटों और बेटियों की परवरिश में फर्क है। बदलाव उन रूढ़िवादी विचारों में भी, जहां महिलाओं को एक सीमित दायरे में बांधकर रखना ही पौरुष का प्रतीक माना जाता है।

हालांकि ये बदलाव समाज में हो रहे हैं परंतु उनका प्रतिशत बहुत कम है। हमें एक बड़े और क्रांतिकारी बदलाव की आवश्यकता है।

यकीन मानिए जिस दिन से हर व्यक्ति अपने अंदर ये बदलाव लाने का प्रयास करने लगेगा हमारा समाज एक सुरक्षित समाज बनने की ओर अग्रसर हो जाएगा।

- आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

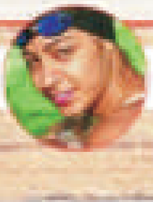

क्या पूंजीवाद द्वारा समावेशी विकास को पाना संभव है?

रक्षिता सुन्द्रियाल

इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व हमें आज के समय में 'पूंजीवाद' और 'समावेशी विकास' की परिभाषा का स्पष्ट होना आवश्यक है। सामान्यता, पूंजीवाद वह आर्थिक प्रणाली या तंत्र है जिसमें उत्पादन के साधन पर निजी स्वामित्व होता है। यह एक आर्थिक पद्धति है जिसमें पूंजी के निजी स्वामित्व, उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत नियंत्रण, स्वतंत्र औद्योगिक प्रतियोगिता और उपभोक्ता द्रव्यों के अनियंत्रित वितरण की व्यवस्था होती है। पूंजीवाद का इतिहास मनुष्य के इतिहास जितना ही पुराना है। हालांकि अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के समय यूरोप में इसका अधिक विकास हुआ और आज जो पूंजीवाद हम देखते हैं, उसे 'औद्योगिक पूंजीवाद' कहा जा सकता है। पूंजीवाद की भांति ही समावेशी विकास की अवधारणा कोई नई नहीं है। ऐसा विकास जो समाज के सभी वर्गों के लिए आर्थिक अवसर पैदा करे और उन अवसरों की समान पहुंच सुनिश्चित करे, उस विकास को 'समावेशी विकास' कहा जाता है। विकास की इस प्रक्रिया का आधार 'समानता' है। यह सबको साथ लेकर चलता है तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के भाव से प्रेरित है।

पूंजीवाद को ऐसी व्यवस्था माना गया है जो अल्पमत द्वारा बहुमत के शोषण पर आधारित है। एक पूंजीपति केवल अपना मुनाफा बटोरने के प्रति अभिप्रेरित होता है। उसे उन श्रमिकों के साथ अपना लाभ बाँटने में कोई रुचि नहीं होती जिनके अधिक श्रम से उसने यह मुनाफा कमाया है। ऐसे में पूंजीवाद द्वारा समावेशी विकास का मतलब क्या है?

पूंजीवाद द्वारा समावेशी विकास का मतलब यह है कि देश के तेज विकास का लाभ हर एक वर्ग या व्यक्ति को मिले। पिछले कुछ दशकों में हमारे देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि दर काफी तेज़ी से बढ़ा है। लेकिन इस तेजी का लाभ सबको नहीं मिल पा रहा है। केवल पूंजीपति वर्ग और मध्यम वर्ग के कुछ हिस्से को ही अर्थव्यवस्था में तेजी का लाभ मिल रहा है। जो देश के दूरगामी भविष्य के प्रति चिंतित हैं वे चाहते हैं कि देश के वंचित वर्गों को भी इसका लाभ मिले जिससे देश का विकास समावेशी हो। समावेशी विकास में जनसंख्या के सभी वर्गों के लिए बुनियादी सुविधाओं यानी आवास, भोजन, पेयजल, शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य के साथ-साथ एक गरिमामय जीवन जीने के लिए आजीविका के साधनों की पूर्ति भी करना है।

ऐसा देखा गया है कि पिछली कुछ सदियों में पूंजीवाद के कारण विश्व के कई भागों में मानव विकास में उल्लेखनीय उछाल आया है। मनुष्य का वर्तमान जीवन स्तर और सभी प्रकार के मानव संसाधन में आए उभार की इससे पूर्व कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। परंतु पूंजीवाद से जितना अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है उतनी ही अमीर-गरीब की खाई भी गहरी हुई है। इसका एक उदाहरण देखते हैं - पहले पूंजीपति एक फैक्ट्री का मालिक होता है और सौ मजदूरों को काम पर लगाता है। तो दस साल बाद वह पांच फैक्ट्रियों का मालिक हो जाता है और पांच सौ मजदूरों को काम पर लगाता है। मजदूर के मुकाबले पूंजीपति की हैसियत पांच गुना बढ़ जाती है। परंतु मजदूर की स्थिति में कोई सुधार नहीं होता।

एक पूंजीपति यह चाह रखता है कि समाज में एक आबादी ऐसी हो जो न्यूनतम वेतन पर उसके लिए काम करने को हमेशा उपलब्ध रहे जिस कारण वह अपना लाभ बाँटने से कतराता है। अगर भारत की बात की जाये तो यह एक मिश्रित अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भी काफी हद तक पूंजीपतियों के हाथ है जिस कारण देश में नौकरी, भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा व अन्य मूलभूत सुविधाओं का आज भी अभाव है। कुलीन वर्ग या पूंजीपति वर्ग द्वारा ही ज्यादातर 'कर चोरी' की जाती है जिस कारण गरीबों तक विकास का लाभ नहीं पहुंच पाता क्योंकि राजस्व में कमी की वजह से कई योजनायें क्रियान्वित नहीं हो पाती। तो क्या पूंजीवाद द्वारा समावेशी विकास असंभव है?

उदारीकरण के दौर से वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को आपस में निकट से जुड़ने का मौका मिला और आज समावेशी विकास की अवधारणा देश और प्रांत से बाहर निकलकर वैश्विक संदर्भ में भी प्रासंगिक बन गई है। पूंजीवाद द्वारा समावेशी विकास संभव है और इसके लिए सबसे जरूरी है 'समान अवसर'। विश्व में जो आर्थिक असमानता व्याप्त है उसका कारण समान अवसरों की कमी है। इस कमी को दूर करने में सरकार का महत्वपूर्ण किरदार है। इसी दिशा में सरकार कदम बढ़ा भी चुकी है। कल्याणकारी योजनाओं में समावेशी विकास पर विशेष बल दिया गया है और बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) का तो सारा जोर एक प्रकार से समावेशी और सतत् विकास के लक्ष्य हासिल करने पर है। आज सरकार ने कई कल्याणकारी योजनाएं चलाई हैं जैसे प्रधानमंत्री जन-धन योजना, मुद्रा योजना, स्किल इंडिया, नरेगा, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, इत्यादि। परंतु इन योजनाओं के वित्तपोषण के लिए जरूरी है कि देश की 'कर व्यवस्था' को और प्रगतिशील बनाया जाए तथा यह सुनिश्चित किया जाये कि कुलीन वर्ग 'कर चोरी' ना करें। गरीबों को शिक्षा व स्वास्थ्य सेवायें कम खर्च में उपलब्ध हो तथा उनका कौशल विकास हो जिससे उन के पास अवसरों की कोई कमी ना हो और वह आगे बढ़ सकें।

पूंजीवाद यदि नियंत्रित हो तो देश के समायोजित विकास का महत्वपूर्ण कारण बन सकता है। अनियंत्रित होने से पूंजीवाद द्वारा गरीबों का शोषण ही होगा और आय की असमानता बढ़ती जाएगी। परंतु जिम्मेदारी जितनी सरकार की है उतनी ही पूंजीपतियों की भी है। अगर पूंजीपति अपना कर पूरी ईमानदारी से अदा करें, भ्रष्टाचार से दूर रहें, अपने मजदूरों के प्रति संवेदनशील बनें, कृषि-क्षेत्र जैसे क्षेत्रों में निवेश करें तथा समाज कल्याण की गतिविधियों को बढ़ावा दें तो निश्चित ही 'समावेशी पूंजीवाद' से देश का संपूर्ण विकास होगा। एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा से ही पूंजीवाद और लोकतंत्र के बीच परस्पर सामंजस्य का संबंध संभव है जिससे देश के समायोजित विकास का लक्ष्य प्राप्त होगा।

- परिवीक्षाधीन अधिकारी

महिला शक्ति का प्रथम स्तंभ माँ

संकलन : शिव कुमार गुप्ता

बस से उतरकर जेब में हाथ डाला।
मैं चौंक पड़ा।

जेब कट चुकी थी।
जेब में था भी क्या?

कुल 90 रुपए और एक खत, जो मैंने
माँ को लिखा था कि..... मेरी नौकरी छूट गई है,
अभी पैसे नहीं भेज पाऊँगा।
तीन दिनों से वह पोस्टकार्ड जेब में पड़ा था।

पोस्ट करने को मन ही नहीं कर रहा था।
90 रुपए जा चुके थे। यूं 90 रुपए कोई
बड़ी रकम नहीं थी, लेकिन जिसकी नौकरी छूट चुकी हो,
उसके लिए 90 रुपए, नौ सौ से कम नहीं होते।

कुछ दिन गुजरे। माँ का खत मिला।
पढ़ने से पूर्व मैं सहम गया।
जरूर पैसे भेजने को लिखा होगा।.....
लेकिन, खत पढ़कर मैं हैरान रह गया।
माँ ने लिखा था "बेटा, तेरा 1000 रुपए
का भेजा हुआ मनीऑर्डर मिल गया है। तू कितना अच्छा है रे!....
पैसे भेजने में कभी लापरवाही नहीं बरतता।"
मैं इसी उधेड़- बुन में लग गया कि आखिर
माँ को मनीऑर्डर किसने भेजा होगा?
कुछ दिन बाद, एक और पत्र मिला।
चंद लाइनें थीं आड़ी तिरछी।
बड़ी मुश्किल से खत पढ़ पाया।
लिखा था "भाई, 90 रुपए तुम्हारे और
910 रुपए अपनी ओर से मिलाकर मैंने
तुम्हारी 'माँ' को मनीऑर्डर भेज
दिया है। फिकर न करना।.....
'माँ' तो सबकी एक-जैसी होती है न।
वह क्यों भूखी रहे?.....
तुम्हारा.......
.......जेबकतरा..

प्र.का. राजभाषा विभाग

पावर लिफ्टिंग में विश्व कीर्तिमान कायम करने वाली प्रथम महिला – सुनिता लाहा (1989)

बंधन मुक्ति की चाह

ज्योत्सना सिंह

हर माह हम चार सहेलियाँ नेहा, पूजा, प्राची और मैं एक दिन गेट-टूगेदर करते हैं, इस बार हम सब नेहा के घर इकट्ठा हुए थे। हंसी-ठिठोली में कब शाम हो गई, पता ही नहीं चला। "काफी देर हो गई, मुझे चलना चाहिए", ऐसा कहते हुए मैंने अपना पर्स उठाया। नेहा बोली "अभी बैठ न, सब एक साथ निकल जाना"।

"नहीं-नहीं पूजा और प्राची तो फ्री हैं जब तक चाहें, रुक सकती हैं, लेकिन मेरे घर में सास-ससुर हैं, वे दोनों मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। ऐसा कहते हुए मैं दरवाजे के ओर बढ़ने लगी, इस पर प्राची मुझे रोकते हुए बोली "क्या अंजलि, महीने में एक ही दिन तो होता है, जो तेरा अपना है बाकी पूरे महीने तू उनकी चिंता करती ही है न"।

"नहीं प्राची, मुझे घर जाकर खाना बनाना है, मम्मी-पापा को जल्दी खाना खाने की आदत है।"

पूजा कोने में खड़ी ध्यान से हमारी बातचीत को सुन रही थी तभी वह बोली, "अंजलि, तुझे नहीं लगता, तू बेवकूफ बन रही है"।

"क्या मतलब?" मैंने चौंक कर पूछा, तो पूजा मुझे समझाने लगी, "देख अंजलि तेरे पति अंकुर अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र नहीं हैं। उनके दो बड़े भाई और भी हैं। अपने माता-पिता के प्रति अंकुर के भाईयों की कोई जिम्मेदारी नहीं है क्या? वे दोनों कभी अपने पास क्यों नहीं बुलाते? यह कहाँ का न्याय है कि तेरी दोनों जेठानियां मौज करें और तू अकेली सास-ससुर के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करे, क्या तेरे सास-ससुर ने कोई खजाना तेरे नाम कर दिया है, जो उन्हें रखने का दायित्व अब तेरा ही है।"

"ऐसा नहीं है पूजा, एक बार मम्मी-पापा दोनों जेठजी के पास गए थे, लेकिन मेरी जेठानियों ने उन्हें अपने पास रखना नहीं चाहा। उनके दुर्व्यवहार के कारण एक माह दोनों के पास रहकर वे वापिस लौट आए"।

"वे इसलिए वापस लौट आए, क्योंकि तेरे रूप में उन्हें विकल्प मिला हुआ है। यदि तू भी अपनी जेठानियों वाला रवैया अपना ले, तब उन्हें दूसरे बेटों के पास जाना ही पड़ेगा" पूजा बोली।

"मैं अंकुर को अच्छे से जानती हूँ पूजा वे मम्मी-पापा को अब अपने भाईयों के पास भेजने के लिए कभी सहमत नहीं होंगे। मैंने कहा।

इस पर पूजा बोली, "ठीक है, मम्मी-पापा नहीं जाते, तो तुम दोनों चले जाओ"।

"क्या मतलब?" मैंने पूछा, तो पूजा बोली, "देख, अंकुर का ऑफिस तुम्हारे घर से काफी दूर है न आने-जाने में काफी समय लगता है। अंकुर को समझाकर तुम लोग वहीं शिफ्ट कर लो, वीकेंड पे मम्मी-पापा के पास आते रहना। अंजलि, मैं सच में तेरे भले के लिए कह रही हूँ। अभी तेरी शादी को एक साल भी नहीं हुआ है। अभी लाइफ को एंजॉय नहीं करेगी, तो कब करेगी? देख हमारी तरफ, हम तीनों कितनी मस्ती से

अपने-अपने पतियों के साथ अकेली रह रही हैं, न सास-ससुर का झंझट, न किचकिच, अकेले रहने से पति भी मुट्ठी में रहते हैं, अन्यथा संयुक्त परिवार में तो पति बेचारे माता-पिता और पत्नी के बीच पेंडुलम की भांति डोलते रहते हैं।" पूजा की बात पर सब मुस्कुरा दिए, वह आगे बोली, "याद रख, कर्त्तव्यों की अग्नि में स्वयं को होम करके कुछ हासिल नहीं होगा, सिवाय कुंठा और निराशा के, अभी तो तेरे सास-ससुर की सेहत ठीक है, कल को बीमार हो गए, तब क्या होगा, कभी सोचा है तूने, इसलिए कह रही हूँ, जितना जल्दी हो सके, इस जंजाल से निकल, "पूजा की बातों ने मेरे शांत दिलो दिमाग में हलचल पैदा कर दी थी। अनमनी सी मैं घर लौटी, तो पापा ने मुस्कुराकर पूछा, "आ गई बेटा, आज का प्रोग्राम कैसा रहा?"। "अच्छा रहा" ऐसा कहते हुए मैं हमेशा की तरह उन दोनों के पास बैठी नहीं और अंदर जाने लगी, तो वे बोले "क्या बात है अंजलि, तुम्हारा चेहरा क्यूं उतरा हुआ है?"

मैंने कहा "कुछ नहीं पापा, सिर में हल्का सा दर्द है" मम्मी बोली, "सिर में दर्द है तो जाकर आराम कर, मैं अभी बाम लगा देती हूं और गरमा-गरम चाय भी देती हूं। कोई और वक्त होता, तो मेरा मन उनके स्नेह से भीग जाता, लेकिन आज बात कुछ और ही थी। पूजा की बातें दिलोदिमाग पर छाई हुई थीं।

मैं बिस्तर पर लेट गई थी सोने के लिए पर मेरी आंखों में नींद नहीं थी। रातभर यही सोचती रही कि क्या मिला मुझे अंकुर से विवाह करके सिर्फ कर्त्तव्य और जिम्मेदारियाँ, शादी से पहले क्या-क्या ख्वाब थे मेरे, पर कोई भी पूरा नहीं हुआ। आँखें मूंदे मैं अपनी सोच की दिशा बदलने का प्रयास करने लगी और मेरे विचारों के सुई पुनः अपनी जेठानियों पर जाकर केंद्रित हो गई। कितना ऐश कर रही है दोनों, न किसी की रोक-टोक, न जवाबदेही, क्यों होता है, हमेशा मेरे ही साथ ऐसा मैं ही हमेशा लूजर क्यों रहती हूं पढ़ाई में मैं बहुत होशियार थी, डॉक्टर बनना चाहती थी, पर जिस दिन मेडिकल का टेस्ट था, उससे एक दिन पहले बाबू जी को हार्ट अटेक आ गया, जिससे मैं एक्जाम नहीं दे पाई, डॉक्टर बनने का सपना, सपना ही रह गया।

एमएससी के बाद अंकुर से शादी के ठीक एक सप्ताह पहले बाबूजी का स्वर्गवास हो गया। एक सादे से समारोह में मेरी शादी हो गई थी। बाबूजी के लिए ठीक से रो भी नहीं पाई और ससुराल आ गई। यूं मुझे अंकुर के मम्मी-पापा से कोई शिकायत नहीं है। दोनों मुझसे स्नेह रखते हैं मेरी परवाह करते हैं, पर अकेले रहने की चाहत किसे नहीं होती। बंधन रहित जीवन जीने की लालसा हर किसी के दिल में होती है। मेरे दिल में भी है और आज जब पूजा ने मुझे इस बात का एहसास कराया, तब से यह लालसा अपने उफान पर आ गई।

उस दिन से मैं घर में अनमनी सी रहने लगी थी, न किसी से ज्यादा बात करती और न हमेशा की तरह मम्मी-पापा के पास बैठती, यहाँ तक कि घर का काम करने में भी मैं लापरवाही बरतने लगी थी।

मेरी खामोशी से वे सब परेशान हो गये थे, अंकुर ने कई बार पूछा "आखिर बात क्या है अंजलि, क्यों इतनी चुपचाप रहती हो?" लेकिन मैं फीकी सी मुस्कुराहट के साथ, बात को टाल देती। मम्मी-पापा के चेहरों पर अब चिंता की लकीरें नजर आने लगी थी। शायद दोनों अपने असुरक्षित भविष्य को लेकर भयभीत हो गए थे।

15 दिन बाद बाबू जी की पहली बरसी आई मैं इसी उधेड़बुन में थी कि बाबूजी की बरसी पर ऐसा क्या करूँ, जिससे मुझे मानसिक शांति मिले। मुझे ख्याल आया, क्यों न ओल्ड एज होम में जाकर वृद्धों को खाना खिलाऊं। इस विचार के आते ही मैं तैयारी में जुट गई।

बरसी वाले दिन मैं सुबह 4 बजे से उठकर बाबूजी की पसंद की चीजें बनाई, बाजार से फल और मिठाइयाँ खरीदी और ओल्ड एज होम पहुंच गई। वहाँ करीब 15-16 बुजुर्ग बैठे थे। मैंने खाना टेबल पर सजाया और उनसे खाने का आग्रह किया। मेरी लाई कचौरी, छोले सब्जी और रायते को देखकर उनकी आँखों में चमक आ गई, शायद बहुत समय से उन्होंने अच्छे खाने का स्वाद नहीं चखा था। सबने भरपेट खाया और मुझे ढेरों आशीर्वाद दिए, उन सब के साथ देर तक मैं बातचीत करती रही, जब मैंने उनसे यह पूछा कि उन्हें यहाँ क्यों आना पड़ा तब सभी गमगीन हो उठे, सबके अपने-अपने दर्द और अपनी-अपनी विवशताएं थीं। सरिता जी के पति का स्वर्गवास

हो चुका था, वह दुनिया में अकेली थी, इसलिए उन्हें यहाँ आना पड़ा। रविकांत जी के पास जब तक पैसा था, तब तक घर में कद्र थी रिटायरमेंट के बाद मिले धन को उन्होंने बेटे के मकान में लगा दिया और खाली हो गए, तब बहू ने उन्हें फालतू का चीज समझकर घर से निकाल दिया। उनमें से अधिकतर अपने बच्चों की ज्यादतियों के शिकार थे।

रिटायर्ड प्रोफेसर देशबंधुजी की बात सुनकर मैं चौंक सी गई थी, उनकी कहानी मानो मेरी मनः स्थिति बयान कर रही थी शादी के कुछ समय बाद उनके बेटा-बहू अलग हो गए थे, क्योंकि उनकी बहू को बंधन पसंद नहीं था। वह आज़ाद रहना चाहती थी। जब तक उनकी पत्नी जिंदा रहीं, वे दोनों अकेले रहते रहे। पत्नी के स्वर्गवास के बाद बेटा-बहू उन्हें लेने तो आए, पर वे नहीं गए और वृद्धाश्रम चले आए। पत्नी को याद कर उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। भर्राए कंठ से वे बोले, ''माता-पिता इतने जतन से बच्चों को पालते हैं और बच्चे क्या करते हैं उनके लिए? बुढ़ापे में उनका सहारा तक नहीं बनना चाहते, बोझ समझते हैं।

''आज के बच्चे अपने माता-पिता को अपने बुजुर्गों के साथ जैसा व्यवहार करते देखेंगे, वैसा ही व्यवहार वे भी बड़े होकर उनके साथ करेंगे'' देशबंधुजी हाँफने लगे थे। हृदय की समस्त वेदना उनके चेहरे पर सिमट आई थी गला खंखारकर वे पुनः बोले, ''बच्चे नहीं समझते कि घर के बड़े-बुजुर्ग आँगन के वृक्ष के समान होते हैं, जो भले ही फल न दें, परंतु अपनी छाया अवश्य देते हैं। देशबंधुजी के शब्दों ने मेरी अंतरात्मा को कचोट लिया था। यह क्या करने जा रही थी मैं?अपने माता-पिता समान सास-ससुर को छोड़ देना चाहती थी। कल को उन्हें भी यहीं आना पड़ता तो?इस विचार ने मुझे झकझोर दिया। वे लोग मेरी मनः स्थिति अवश्य भाँप चुके होंगे। अब क्या मुँह दिखाऊँगी मैं उन्हें, मन ही मन पछताते हुए मैं घर से बाहर आकर ठिठक गई। अंदर से पापा की आवाज आ रही थी। ''अंकुर, आज मुझे और तुम्हारी मम्मी को अंजनी की खामोशी और उदासी की वजह समझ में आई। आज उसके बाबूजी की बरसी है। पिछले कुछ दिनों से उन्हीं को याद कर वह दुःखी थी। अरे विवाह से एक हफ्ते पहले उनका देहांत हो गया था। रो कर अपना मन हल्का भी नहीं कर पाई और ससुराल आ गई। अपने दर्द को समेटे वह हमसे हँसती-बोलती रही और हम भी उसकी पीड़ा को न समझ पाए''।

''आप ठीक कह रहे हैं पापा'', अंकुर की आवाज आई। तभी मम्मी बोली हम तीनों को अंजलि का पहले से अधिक ख्याल रखना चाहिए। हफ्ते भर बाद तुम दोनों की पहली शादी की सालगिरह है। हम चाहते हैं, तुम अंजलि को घुमाने बैंकॉक ले जाओ''।

''ठीक है पापा'' ऐसा अंकुर ने कहा।

''और सुनो, यह हमारी तरफ से तुम दोनों की शादी की सालगिरह का तोहफा है'' इससे अधिक मुझसे सुना नहीं गया। ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है। वे मेरे मन की उथल-पुथल को नहीं समझ सके थे। मैंने उन्हें कितना दुःख पहुँचाया, कितना परेशान किया, फिर भी दोनों मेरी फिक्र कर रहे हैं। उनके मन की सरलता देख मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मैं तेजी से अंदर की ओर बढ़ी और उनके गले लग रो पड़ी। मम्मी-पापा का हाथ मेरे सिर पर था। मैंने दोनों के हाथों को कसकर थाम लिया था, कभी न छोड़ने के लिए।

अधिकारी, जोखिम प्रबंधन विभाग

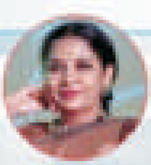

महिलाओं में सर्वाधिक बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली महिला – **शबाना आजमी**

शक्ति का सशक्तिकरण

रजनी चौरसिया

कभी किसी ग्रामीण परिवेश में यात्रा का अवसर मिले तो दो बातें संज्ञान में आएंगी। पहला पुरुष कृषक 3-4 घंटे तक खेतों में काम करने के पश्चात विश्राम करते दिखेंगे और दूसरा स्त्रियाँ दिनभर खेत के किसी कोने में बैठकर निराई, गुड़ाई जैसा कोई न कोई कार्य करते हुए। फिर अपने घर वापस जाते ही पुरुष तो बैठकर भोजन की प्रतीक्षा करता रहता है और वहीं स्त्री, पुरुष और बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था करने में व्यस्त हो जाती हैं। महिला परिवार के आखिरी सदस्य के रूप में भोजन ग्रहण करती है साथ ही सबके विश्राम के पश्चात उनका विश्राम प्रारंभ होता है। एक क्षण के लिए कल्पना करें कि यदि स्त्रियाँ इस प्रकार स्वाभाविक कर्म करने से मना कर दें तो समाज के सारे समीकरणों में असंतुलन पैदा हो जाएगा। पुरुष भोजन के अभाव में कार्य करने योग्य ही नहीं रहेंगे। बच्चों के रुदन से भयंकर सामाजिक कोलाहल उत्पन्न हो जाएगा। महिलाएं जिस तन्मयता से धरती माँ की सेवा करती हैं, फसल के प्रतिफल के रूप में वही तो देश को भोजन देता है। इतनी बात यह समझने के लिए पर्याप्त है कि नारी समाज की धुरी है और सामाजिक कार्यों के लिए अपरिहार्य। नारी की इसी भूमिका के लिए भारतीय वाङ्मय में कहा गया है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।" अर्थात जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।

इसी पृष्ठभूमि से यह भी समझा जा सकता है कि बिना लाग-लपेट के और बिना किसी सामाजिक शक्ति के जो पूरे समाज का आधार है, उसके सशक्तिकरण से समाज का कितना उत्थान हो सकता है। वस्तुतः आदिकाल से स्त्रियों को उपेक्षित बनाकर उनके अधिकारों के अपहरण के लिए जो सामाजिक घेराबन्दी हुई है, उसी का परिणाम है कि तकनीकी विकास के बावजूद सामाजिक अशांति में बेतहाशा वृद्धि हुई है। अतः यह आवश्यक है कि प्रकृति के इस विशेष सृजन को इतना अधिकार संपन्न अवश्य किया जाए कि वह अपनी सामाजिक सकारात्मक भूमिका का प्रभावी निर्वहन कर सके। उन्नीसवीं शताब्दी में आधुनिक समाज के निर्माण के लिए भारत के मनीषियों ने जो परिकल्पना की थी उसका मूलाधार भी लिंग भेद की समाप्ति ही था। जिस महान राष्ट्रीय आंदोलन के उद्देश्य का प्रारंभ स्त्रियों पर लगे प्रतिबंध को हटाने से या उसके प्रयास करने से इतना विस्तारित हो गया कि शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को भी घुटने टेकने पड़े।

वस्तुतः भारत की आज़ादी की लड़ाई तो तभी शुरू हो गई थी जब राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा का अंत किया। ईश्वरचंद विद्या सागर, डी. ए. कर्वे, बेहराम जी, मालाबारी इत्यादि लोगों ने तो विधवा विवाह के पक्ष में समर्थन जुटाया। इतिहास साक्षी है कि तुर्की के संक्रमित और रूढ़िवादी समाज में अधिकारों की विवेचना और पर्दा प्रथा के कारण जो स्त्रियाँ आत्मनिर्भर नहीं थीं, मुस्तफा कमाल पाशा के प्रयासों से शिक्षा के प्रसार द्वारा वही स्त्रियाँ विश्व में नामीगिरामी एथलीट बनकर उभरी हैं। जब-जब स्त्रियों का अपमान हुआ युग का भी अंत हो गया। यहाँ तक कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम द्वारा माता सीता के परित्याग ने भी त्रेतायुग की अंतिम शिला रखी। द्रौपदी के चीरहरण ने द्वापरयुग के अंत की घोषणा कर दी। स्त्रियों की उपेक्षा ने समाज को हमेशा पाताल की ओर ही धकेला है।

सशक्तिकरण एक अस्पष्ट शब्द है और इसलिए महिला सशक्तिकरण के विषय में लंबे-लंबे व्याख्यान, बड़े-बड़े कानूनों के बावजूद धरातल पर महिलाएं अवश्य ही दिखी हैं। प्रस्तुत लेख में सशक्तिकरण का प्रारंभिक चरण स्त्री शिक्षा के आलौकिक सूर्य द्वारा ज्ञान के अतिरिक्त स्त्रियों को अपनी शक्ति से भी अवगत कराना है। उन्हें अपनी वास्तविक क्षमता का भी पता चलता है। उन्हें पता चल जाता है कि जैविक दृष्टिकोण से उन्हें दुर्बल योनि माना जाना एक सुविचारित झूठ है। ऐसे कई दृष्टांत हैं जब महिलाओं ने ऐसी शक्ति का प्रदर्शन किया है कि सूरमाओं के दांत खट्टे हो गए। त्रेतायुग के देवासुर संग्राम में जब दशरथ अचेत हो गए थे तो कैकई ने ही उनके शत्रु को पराजित किया था। झांसी की रानी, अहिल्या बाई होलकर, चाँद बीबी जैसी महिलाओं ने महापराक्रमी शत्रु को दिन में तारे दिखा

मैग्सेसे पुरस्कार पाने वाली प्रथम सम्मानित महिला — डॉ. अमृता पटेल (1992)

दिए थे। शक्ति, ऊर्जा, कर्मठता का देव ज्ञान जिसे गायत्री कहते हैं, भी ऊषा और अदिति जैसे देवियों को समर्पित है। अर्थात शौर्य और तेज में अवसर मिलने पर नारी पुरुषों से श्रेष्ठ ही साबित हुई है। आधुनिक जगत में भी चंदा कोचर, मैडम अरुंधति भट्टाचार्य, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स और इसमें महिला साहित्यकारों का नाम भी जोड़ा जाए तो बड़ी सूची तैयार हो जाएगी। इन वीरांगनाओं ने समाज के दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया है। बीस वर्ष पूर्व बैंकिंग जगत में महिलाओं का प्रवेश अत्यल्प था तो बैंक भी एकात्मक औचित्य का परिचालक रहा। आज जब महिलाओं ने इस क्षेत्र में पुरुषों को पीछे धकेल दिया है तो कोई भी अनुभव कर सकता है कि इस उद्योग में कितना चमत्कारी परिवर्तन हुआ है। वजह यह है कि स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से सेवाधर्मी होती हैं और सेवा क्षेत्र में उनका आगमन ही उस क्षेत्र को गतिशील बना देता है।

सशक्तिकरण का दूसरा अभिप्राय महिलाओं के लिए निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका का प्रावधान करना। असल में महिलाओं का निर्णय व्यापक परिप्रेक्ष्य में व्यावहारिकता से परिपूर्ण देखा गया है। यदि किसी महिला को उसकी इच्छा के आधार पर रोजगारोन्मुख ऋण दिया जाए तो उस ऋण की चुकौती अवश्य ही होती है क्योंकि महिलाएं अपने आत्म-सम्मान से समझौता नहीं करतीं। इसके विपरीत पुरुष अल्प लाभ के लिए मान-अपमान की परवाह नहीं करते। विशेष सामाजिक निर्णय में भी नारी मितव्ययिता, प्रतिष्ठा, सहयोग तथा परस्पर स्नेह के आधार पर फैसला करती है और यह सभी तत्व समाज को ज्यादा प्रभावी बनाते हैं। चंदा कोचर के नेतृत्व में आईसीआईसीआई बैंक की प्रगति सबके सामने है। मैडम अरुंधति ने अपने संचालन काल में भारतीय स्टेट बैंक को जो नेतृत्व प्रदान किया है वह प्रशंसनीय है। बड़ी परिदृश्यों पर देखा जाए तो श्रीमती इन्दिरा गांधी और मारग्रेट थैचर ने अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए और अपने-अपने देश को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। आवश्यकता है कि गाँव स्तर पर महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया के लिए भी योग्य बनाया जाए और उन्हें इसके लिए अवसर दिए जाएं।

यद्यपि लिंगानुपात के दृष्टिकोण से भारतीय गणराज्य में स्त्रियाँ पचास प्रतिशत तो नहीं हैं परंतु इतना अवश्य है कि अगर उनकी योग्यता और क्षमता का समुचित ढंग से उपयोग किया जाए तो अनायास देश की सृजनात्मक क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि होगी और इसी का राष्ट्रीय व्युत्पन्न है सकल राष्ट्रीय उत्पाद। आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से मानव संसाधन और उसमें भी वैसे संसाधन जो स्वाभाविक रूप से कुशल होते हैं, का योगदान अतिमहत्त्वपूर्ण होता है। गरीब से गरीब घरों में भी बालिकाएं सिलाई, कढ़ाई, बुनाई जैसी मौलिक कुशलता से पूर्ण परिचित होती हैं जबकि इसके विपरीत पुरुष श्रमसाध्य कार्य तो शायद कर सकते हैं परंतु बारीकी का काम उनके बस का नहीं होता। जो प्रतिभा गृह-सज्जा, बच्चों की परवरिश, गृह-प्रबंधन जैसे छोटे-मोटे कार्यों में स्वयं निखरकर आती है, उसके लिए यदि उन्हें सामाजिक अपवाद बनाकर कुंद कर दिया जाए तो इससे अधिक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक अपराध शायद ही कुछ होगा।

पंडित जयशंकर प्रसाद ने नारी को श्रद्धा कहा है 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो'। अब यह प्रश्न आधुनिक प्रबंध विज्ञान में कितना समीचीन और उपयोगी है बताने की आवश्यकता नहीं। आधुनिक प्रबंध विज्ञान मानता है कि श्रद्धा व निष्ठा ऐसे दो अस्त्र हैं जो किसी भी समस्या निराकरण और कार्य-कौशल के लिए अनिवार्य हैं। यह दोनों गुण महिलाओं के स्वाभाविक गुण हैं और यहाँ तक कि बर्तन धोने, पोंछा लगाने जैसे छोटे-छोटे कार्यों में भी यह दृष्टिगत होता है। इसी प्रतिभा व गुण का नाम नारी है।

महिलाओं के संदर्भ में सशक्तिकरण का एक और अभिप्राय है उनको आत्म विश्वास से पुनर्स्थापित करना। वर्षों तक शोषण के बाद उनका आत्म-विश्वास कुंठित हो चुका है। उनके आत्म विश्वास को पुनर्स्थापित करने के लिए हमें सकारात्मक सोच के प्रति जागरूक होना होगा। उनके प्रति शोषण का अंत करना और सामाजिक दृष्टिकोण का बदलना अत्यंत आवश्यक है। स्वतंत्र विचरण करने वाली स्त्रियों पर प्रचलित सामाजिक मापदंड के अनुसार लांछन लगाकर उनकी स्वतंत्रता को तहस-नहस करने का प्रयास जब समाप्त हो जाएगा तभी महिलाओं का वास्तविक सशक्तिकरण होगा। प्रांगण में उछलती कूदती बच्चियों पर यह कहकर रोक लगाना कि तुम तो लड़की हो, बचपन से ही महिलाओं के मन में अपने प्रति अविश्वास को जन्म देता है। वही बचपन जब बड़ा होता है तो दबा, सहमा और अपनी शक्तियों से अपरिचित आश्रित जीवन जीने के लिए

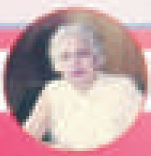

अभिशाप होती है। ऐसा नहीं है कि इसके लिए सरकारी प्रयास नहीं किए गए परंतु जैसा कहा गया है कि सशक्तिकरण में नारी प्रताड़ना से जुड़े मुद्दे को शामिल नहीं किया गया। इससे साक्षर महिलाओं के लिए शायद नए मार्ग प्रशस्त हुए हैं किंतु ग्रामीण परिवेश में कमज़ोर महिलाओं के लिए लक्ष्य बनाकर उनके सशक्तिकरण का प्रयास नहीं किया गया। हाल ही में उज्ज्वला योजना के माध्यम से भटकी हुई महिलाओं के पुनर्स्थापन के लिए कोशिशें तो की गई पर समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं किए गए। इससे महिलाओं का अपमान ही होता है। उदाहरणस्वरूप यदि वेश्यालय से छुड़ाई गई महिलाओं को समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिलाने के लिए सार्थक प्रयास नहीं किए गए तो ऐसी महिलाएं समाज की ओर दुश्मन बन जाती हैं। स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं का विस्तार, रोजगार में आरक्षण, शिक्षा के लिए विशेष सुविधाओं का प्रावधान सरकार द्वारा किया भी गया है परंतु उभरती हुई महिलाओं के प्रति स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के स्थान पर अनाप-शनाप आरोप लगाकर उनको कर्म पथ से विचलित कर देना जब तक समाप्त नहीं किया जाएगा, सशक्तिकरण अर्थहीन ही रहेगा।

कुल मिलाकर यह निश्चित है कि महिलाएं शक्ति का पर्याय है। यह कल्पनीय है कि बिना किसी सृजन क्षमता के प्रकृति का यह स्वरूप किस प्रकार अपनी गति प्राप्त करेगा? इस महान शक्ति का सशक्तिकरण बेमानी बात है। हमें तो सिर्फ उस आवरण को हटाना है जो एक शाश्वत झूठ के साथ गहरा होता चला गया और वह शाश्वत झूठ यह है कि महिलाएं कमज़ोर होती हैं। इस स्थिति में सशक्तिकरण का सीधा अर्थ होगा "सामाजिक सूझबूझ व एक ऐसे समाज का निर्माण जहाँ प्रतिभाएं स्वपोषित हों। बस यही हमारा प्रयास हो कि महिला सशक्तिकरण का कार्य स्वतः पूर्ण हो। भोपाल की कवयित्री सुश्री अनु सपन ने ठीक ही कहा है:

"इस तरह से मुझे मत देखिए,
भाव-सूची नहीं हूँ मैं बाज़ार की।
मेरी साँसें हर एक पल उपन्यास हैं,
कोई कतरन नहीं हूँ मैं अख़बार की"

आंचलिक कार्यालय भोपाल

चलते-चलते

क्या! आप अपनी धर्मपत्नी को 'आप' या 'तुसी' कह कर बुलाते हैं?

राजिंदर सिंह बेवली

उन दिनों मैं अपने आंचलिक प्रबंधक श्री एस. एस. कालड़ा जी के साथ अक्सर शाखा प्रबंधकों की बैठकों में भाग लेने जाया करता था। एक क्लस्टर की शाखाओं तक पहुँचने में एक या डेढ़ घंटा तो लग ही जाया करता था। बहुत अच्छे वक्ता थे कालड़ा साहब। वैसे भी पूर्व में प्रशिक्षण केंद्र में बतौर संकाय सदस्य अपनी सेवाएं दे ही चुके थे। रास्ते में कभी कभी उनकी धर्मपत्नी का फोन आ जाया करता था और बड़े ही अदब से बहुत छोटी किंतु अच्छी बात किया करते थे। पत्नी को सदा 'आप' कहकर संबोधित किया करते थे। यही नहीं फोन पर सबसे पहले वे 'सत् श्री अकाल' शब्द का प्रयोग किया करते थे। एक दिन मैंने पूछ ही लिया 'सर, आप अपनी पत्नी से बात करते हैं और 'आप' शब्द का प्रयोग करते हैं.....' मैं तो चाहते हुए भी ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ। उन्होंने बताया कि शादी के 2-3 वर्ष बाद से ही उन्होंने यह आदत विकसित की। उन्होंने बताया कि 'आप' केवल एक शब्द नहीं बल्कि एक दृष्टिकोण है, एक नज़रिया है, महिलाओं के प्रति आपकी सकारात्मकता का। 'सत् श्री अकाल' शब्द से कोई बात प्रारंभ करने से आध्यात्मिकता का एक पुट आ जाता है।

मैंने एक बार फिर से कोशिश शुरू की। यकीन मानिए साथियों... लगभग नामुमकिन सा काम लगा। बात-बात पर रौब मारने की आदत को बहुत ठेस पहुँची। जब गुस्सा आता तो 'आप' कहने में शर्मिंदगी लगती। और कोशिश करने पर मैंने नोट किया कि 'आप' शब्द के प्रयोग से महिलाओं को इज्ज़त देनी ही पड़ती है जो कइयों को तो अपनी शान के खिलाफ लगता है। 'आप' से गुस्से पर नियंत्रण होता है, 'आप' से घर में शांति का वातावरण कायम होता है, 'आप' से आदत बदलती है पुरुषों में अहंकार की और अपने आप को बहुत अधिक शक्तिशाली मानने की। मुझे बताते हुई कुछ कुछ खुशी हो रही है कि मैं 'आप' कहने की इस यात्रा में सत्तर प्रतिशत कामयाब हो चुका हूँ। आप भी शुरू करके देखिए ना..... अपनी 'धर्मपत्नी' को आप कहना। खुद ही जान जाएंगे... कितना मुश्किल है किंतु कितना अच्छा भी.......

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

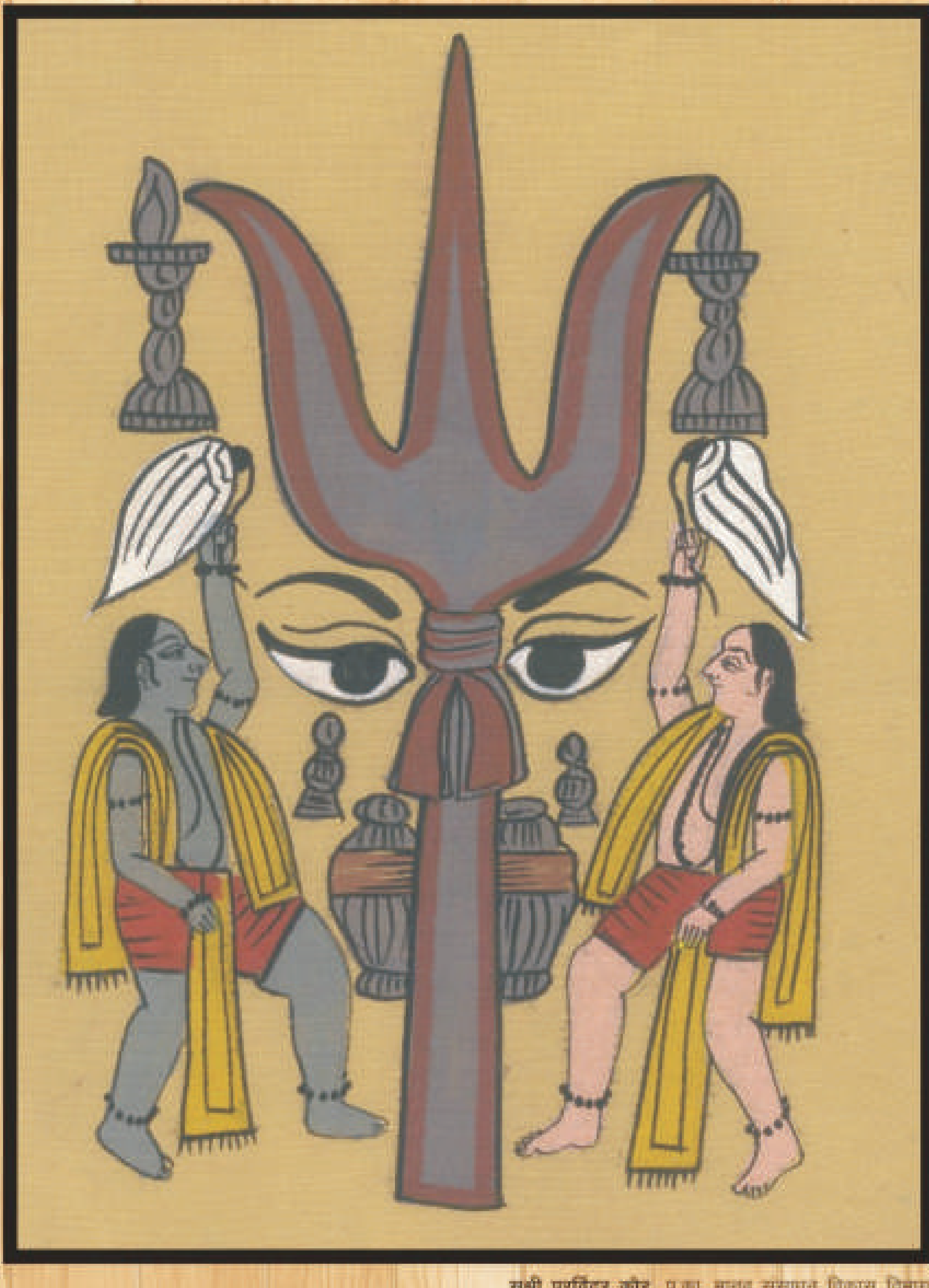

सुश्री परविंदर कौर, प्र.का. मानव संसाधन विकास विभाग

ਧੰਨ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ਼ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਸਹਾਇ ॥

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

द्वारा आयोजित

फैस्टीवल बोनान्ज़ा स्कीम

आवास, ऑटो एवं उपभोक्ता ऋण के लिए

01-10-2016 से 31-12-2016

आवास ऋण

- न्यूनतम मासिक किश्त
- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- आकर्षक ब्याज दर*
- अधिकतम भुगतान समय 40 वर्ष तक

ऑटो ऋण

- न्यूनतम मासिक किश्त
- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- शून्य मार्जिन (इंश्योरेंस आदि छोड़ कर)
- आकर्षक ब्याज दर*
- अधिकतम भुगतान समय 7 वर्ष तक

उपभोक्ता ऋण

- न्यूनतम मासिक किश्त
- शून्य प्रोसेसिंग फीस
- आकर्षक ब्याज दर*
- अधिकतम भुगतान समय 5 वर्ष तक

कॉम्बो प्रस्ताव के अन्तर्गत ऑटो-आवास ऋण, उपभोक्ता-आवास ऋण पर आकर्षक शर्तों का लाभ उठाएं

अधिक जानकारी के लिए हमारी शाखा से सम्पर्क करें अथवा हमारी वेबसाइट www.psbindia.com पर जाएं। *शर्तें लागू